ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मार्च 2019

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

रंगों का पर्व होली की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि आश्रम के पहलवानों ने लहराया परचम

बहादुरगढ़ के आत्मशुद्धि आश्रम के सदस्यों के साथ विजेता पहलवान

बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर डीघल गांव में विशाल दंगल का आयोजन किया गया जिसमें आश्रम के बाल पहलवानों ने एक लंगोट में कई कुश्तियां जीती माईतोय, रोबाट, असतम जोनाराम सभी नागालैण्ड के बच्चे जो आश्रम में रह रहे हैं। इसके अतिरिक्त राहुल, सुजीत व अवनीश ने भी शानदार प्रदर्शन किया। प्रत्येक बाल पहलवानों को नकद पुरस्कार दिये गये। आश्रम पहुंचने पर स्वामी धर्ममुनि, पुरुषार्थमुनि, आचार्य चाँद सिंह, कैप्टन महेन्द्र सिंह छात्र संरक्षक यज्ञवीर व कर्ण सिंह ने बच्चों को प्रोत्साहित किया। पहलवानों के कोच अभिमन्यु योगाचार्य ने बताया कि यदि इन बाल पहलवानों को उचित सुविधा प्रदान हो तो ये देश का नाम रोशन कर सकते है। दंगल स्व. रतनसिंह व ब्रह्मसिंह पहलवान की स्मृति में आयोजित किया गया। आयोजकों में जसवंत भारत कुमार व विरेन्द्र गुणी का सहयोग उल्लेखनीय रहा। मुख्य अतिथि सांसद दिपेन्द्र जी हुड्डा उपस्थित रहे। दैनिक जागरण हिसार 15 फरवरी 2019

आत्मशुद्धि-पथ के आजीवन सदस्य बने

1076
श्री उधम सिंह जी आर्य
सुपुत्र श्री जगदेव सिंह जी आर्य
धनौरा टीकरी, उत्तर प्रदेश

प्रिय बन्धुओं! मास मार्च में अधिंक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अप्रैल अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या **IFSC-ALLA0211948** में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। – व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

फाल्गुन-चैत्र सम्वत् 2075 मार्च 2019

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-18) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-3

(वर्ष 49 अंक 3)

प्रधान सम्पादक
स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

सम्पादक:
श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

सह सम्पादक:
आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

कार्यालय प्रबन्धक
आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

उपकार्यालय
अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम
खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
चल. : 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
हमें वध का पात्र मत बनाओ	7
होली व दुल्हेंडी को हम कैसे मनायें?	8
मुक्ति से पुनरावृत्ति	10
कुछ जानने योग्य बातें	11
वही जीवन सुख पायेगा	12
असीमित अधिकार अराजकता को जन्म देते हैं	13
संयुक्त परिवार में हो रहा विघटन, बिखराव	14
नजला (जुकाम)	15
आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है	16
हंसो और हंसाओ	17
फलित ज्योतिष की अमान्य मान्यताओं से मानव.....	18
दयानन्द का दीवाना पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी	21
अमर शहीद सरदार भगत सिंह	23
शास्त्रार्थ महारथी पं.राम चन्द्र देहलवी जी का हाजिर..	25
मर्यादाओं के संस्थापक श्रीराम	25
श्यामजी कृष्ण वर्मा	30
हिन्दू नववर्ष का इतिहास एवं महत्व	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ धनौरा टीकरी का 43वां महोत्सव

आर्य समाज धनौरा टिकरी का 43वां महोत्सव अथर्ववेद के 1 से 3 काण्ड तक ब्रहद् सत्संग के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव 22 से 24 फरवरी तक चला। यज्ञ व सत्संग के ब्रह्मा व अध्यक्ष स्वामी धर्ममुनि जी महाराज मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ रहे। श्री धुव्र शास्त्री व विक्रम देव शास्त्री द्वारा वेद-पाठ का कार्य बड़ी कुशलता से किया। श्रीमती प्रभा देवी पूर्व प्रधान व संरक्षक आर्यसमाज ने दीप जलाकर महोत्सव का उद्घाटन किया। श्री स्वामी सत्यवेश जी, श्री आचार्य विरेन्द्र शास्त्री जी के प्रवचनों को बहुत पसंद किया गया। भजनों के कार्यक्रम को भी उपस्थित लोगों ने खूब सराहा। श्री ध्रुव शास्त्री, श्री आचार्य शंकर मित्र वेदालंकार, श्रीमती माया देवी आर्या, श्री सुरेशचन्द ढोलक वादक व श्री रामदेव आर्य के भजनों ने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। स्वामी धर्ममुनि जी ने भी सभी को यज्ञ व सत्संग के महत्व को विस्तार से बताया। वेद मन्त्रों की मध्य-मध्य में सरल व्याख्या की गई। 22 फरवरी से 24 फरवरी तक यज्ञ के यजमान ओमपाल सिंह जी, डॉ. मनोज कुमार जी गुप्ता, मा. धीरज सिंह, संयोजक, विनोद कुमार जी व सोनू आर्य रहे। प्रधान श्री जल सिंह जी मन्त्री, श्री ओमपाल जी, कोषाध्यक्ष डॉ. मनोज गुप्ता जी, मा. धीरज सिंह, विनोद कुमार जी, राज सिंह जी, विरेन्द्र आर्य जी, मा. मनोज कुमार जी, श्रीमती प्रभा जी, प. शिवनारायण पुरोहित व स्वागत समिति के सभी सदस्यों ने आए हुए संन्यासियों, विद्वानों व भजनोपदेशकों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में सभी ग्रामवासियों व क्षेत्रवासियों का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री नरेन्द्र आर्य जी द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। – कर्ण देव आर्य

स्वामी शक्तिवेश के बलिदान दिवस सम्पन्न

झज्जर 19.2.19 आर्य समाज के पुरोधा स्वामी शक्तिवेश के बलिदान दिवस पर गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन 18 व 19 फरवरी को पं. जयभगवान आर्य एवं श्री ओमप्रकाश यादव के संयुक्त संयोजन में टीला सिलानी गेट, झज्जर में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि ने की। समारोह को बीते रोज पुलवामा में हुए आतंकी हमले के शहीदों को समर्पित किया गया। स्वामी शक्तिवेश और देश के शूरवीरों को श्रद्धासुमन अर्पित की और मौन भी रखा। श्री धनीराम बेधड़क ने देशभक्ति के मधुर भजन रखें। आचार्य योगेन्द्र, आचार्य यशवीर, योगाचार्य सत्यपाल वत्स, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, ब्रह्मचारी सत्यकाम रोहतक, स्वामी सच्चिदानन्द फर्रूखनगर, राजबीर आर्य बहादुरगढ़, डॉ. एच.एस. यादव पूर्व प्राचार्य, पहलवान प्रेमदेव खुड्डन, पं. रामकरण, सुश्री प्राची आर्या रोहतक, ऋषिपाल आर्य खेड़का, श्री ओम गोयलाकलां, ब्र. अनार आर्य गोच्छी, दलीप आर्य, पीयुष आर्य, भगवान सिंह आर्य, ब्र. कृष्ण, मा. पनसिंह, ओमप्रकाश सुरहा आदि महानुभावों ने दो दिवसीय कार्यक्रमों में स्वामी शक्तिवेश द्वारा संचालित इन्द्रप्रस्थ, घासेड़ा, अजमेर, बासवाड़ा (मध्य प्रदेश) आदि स्थानों के गुरुकुलों में किए गए महान कार्यो को याद किया। वैदिक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा जिसमें प्रत्येक टीम में दस विद्यार्थी थे। विजेता टीमों को क्रमशः 1100 रूपये, 750 रूपये और 500 रूपये पारितोषिक दिया गया। विद्वानों और सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को दक्षिणा एवं वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। स्वामी ध र्ममुनि ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि आतंकवाद का समूल नष्ट करना बेहद आवश्यक है। कहा कि भावी पीढ़ियों को अच्छे संस्कार देकर ही देश को सही रास्ते पर लाया जा सकता है। गायत्री महायज्ञ में राव दलपत, पहलवान लीलाराम, रामफल खेड़ी, बलजीत यादव, जिले सिंह नजफगढ़, धर्मबीर कलोई, धर्मपाल, रामकंवार, अशोक दुल्हेड़ा, श्रीमती रोशनी, योगाचार्या गार्गी, प्रदीप शास्त्री, मा. द्वारकादास, प्रकाशवीर, रामअवतार, गोपाल गोयल आदि ने आहुतियां प्रदान की। ब्रह्मचारी सुभाष आर्य यज्ञ ब्रह्मा रहें। कुमारी नम्रता आर्या और विवेक आर्य मुख्य यजमान रहें। पं. वेदप्रिय एवं भूराज प्रिय आर्य ने ऋषि लंगर की उत्तम व्यवस्था की।

-**पं. जयभगवान आर्य**, झज्जर (हरियाणा) मो. 9991456619

वैदिक रिती से मनाई 35वीं विवाह वर्षगांठ

माननीय श्री विश्वनाथ आर्य ने आत्मशुद्धि आश्रम में परिवार सहित 35वीं विवाह वर्षगांठ बड़े प्रसन्नचित वातावरण में सपत्निक यज्ञमान बन कर मनाई। श्री विश्वनाथ आर्य और उनकी पत्नी श्रीमती कुसुमदेवी आर्या यज्ञ व सत्संग प्रेमी है। अपने घर पर भी मास के अन्तिम रविवार को यज्ञ व सत्संग का कार्यक्रम रखते है। इस विवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री धनीराम जी बेधड़क श्री रामदेव आर्य, ब्र.ध्रुवशास्त्री ने अपने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। श्रीचांद सिंह आर्य व श्री पुरुषार्थ मुनि जी ने भी अपने सम्बोधन में अपनी-अपनी शुभ कामनाएं प्रेषित की। यज्ञ और सत्संग के कार्य पश्चात् स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा की श्री विश्वनाथ आर्य स्वाध्यशील और बड़े शील स्वभाव के हैं। अन्त में परिवार की तरफ से मधुर व स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई थी। पाचक श्री सुखपाल व व्यवस्थापक श्री विक्रमदेव शास्त्री के प्रबन्ध को सभी ने सराहा। वेद पाठ का कार्य ब्र. कर्ण आर्य द्वारा किया गया।

मासिक सत्संग सम्पन्न

श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़ परिवार द्वारा मासिक सत्संग रविवार 3 मार्च सायं 4 से 6 बजे तक आयोजन किया गया। यजमान आसन पर श्री निखिल व श्रीमती दिव्या देवी अग्रवाल यजमान आसन पर श्री विश्वनाथ जी के सुपुत्र और पुत्रवधू सुशोभित हुए ब्र कर्ण आर्य के द्वारा यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। आश्रम के ब्रह्मचारी श्री नरेन्द्र द्वारा सुन्दर भजन सुनाया गया। श्री विश्वनाथ जी ने भी आध्यात्मिक विचार रखे। आचार्य चांद सिंह जी पुरुषार्थ मुनि जी द्वारा सुन्दर विचार रखे गये तथा मधुर भजन का गान किया गया। अंत में श्री स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा आशीर्वाद के साथ सारगर्भित प्रवचन भी दिया गया। इस अवसर पर मासिक सत्संग में काफी संख्या में माताओं व बन्धुओं ने सत्संग का आनन्द लिया व लाभ उठाया।

स्व. माता दाखा देवी जी का स्मृति दिवस मनाया

अशोक जून ट्रस्टी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने अपनी स्व. माता जी का स्मृति दिवस आत्मशुद्धि आश्रम में ब्रहद् यज्ञ के साथ मनाया। दोनों भाई सतबीर जून व अशोक जून सपत्नीक यजमान के आसन पर शुशोभित रहे। स्वामी धर्ममुनि जी ने दोनों यजमानों का परिचय कराया विशेतया श्री अशोक जून की धार्मिक व उदार प्रवृत्ति के विषय में जानकारी दी। श्री स्वामी रामानन्द जी ने भी अपने संबोधन में प्रभु भक्ति पर विशेष बल दिया। आश्रम के ब्रह्मचारियों तथा श्री रामदेव आर्य ने मधुर भजन, प्रस्तुत किये। श्री पुरुषार्थ मुनि जी ने भी प्रवचन दिया। परिवार के अन्य सदस्य बहने व रिश्तेदार भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। परिवार की तरफ से उत्तम व स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई थी। जिसमें पाचक सुखपाल व विक्रम देव शास्त्री व्यवस्थापक का योगदान सराहनीय रहा। राजवीर आर्य ने भी अपने विचारों व भजन के माध्यम से श्रोतावों को उपदेश किया।

वजन कम करने के कुछ वजनदार सूत्र

मोटापा सेहत का शत्रु है। डाइबिटीज, हाई ब्लडप्रेशर और कई बीमारियों का एक प्रमुख कारण मोटापा ही है। वजन कम करने नुस्खे। ❑ नियमित तौर पर प्रतिदिन व्यायाम करें। ❑ एक सुनिश्चित वक्त पर ब्रेकफास्ट, लंच व डिनर लें। ❑ कम वसायुक्त खाद्य पदार्थो को आहार में वरीयता दें। ❑ पेडोमीटर धारण करें और फिर प्रतिदिन 10,000 कदमों तक टहलें।

शन्ति यज्ञ

योगाचार्य चाँदसिंह के पूज्य पिता स्वर्गीय सुबेदार बलवीर सिंह सांगवान का लगभग 93वें वर्ष की आयु में 4 फरवरी 2019 को सोमवती अमावस्या के दिन दोपहर स्वर्गवास हुआ। अन्त्येष्टि संस्कार उसी दिन सायंकाल वैदिक विधि-विधान से शरीर के वजन बराबर घृत तथा लगभग दो गुनी सामग्री द्वारा वैदिक मन्त्रों से किया गया। शान्ति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का आयोजन 10 फरवरी 2019 वसन्त पचंमी के दिन प्रातः 10 बजे से किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम आचार्य चाँद सिंह द्वारा स्वामी धर्ममुनि जी महाराज अधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

स्वर्गीय सुबेदार बलबीर सिंह ने अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्ण पवित्रता व ईमानदारी के साथ पुरूषार्थ करते हुए सुख-शान्ति से व्यतीत किया। 28 वर्ष तक सेना में सेवा दी जिसमें भारत-पाकिस्तान व चीन युद्धों में भी बहादुरी के साथ भाग लिया और अनेक मैडल प्राप्त किये। सेना से सेवामुक्त होने के पश्चात् भी अपने पूरे जीवन काल में पुरुषार्थ किया तथा सामाजिक कार्यों में भी बढ़चढ़कर भाग लिया। उनके पुरुषार्थ का ही परिणाम है कि अपने पीछे एक भरा-पूरा खुशहाल परिवार छोड़कर गये है।

जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु र्ध्रुव जन्म मृतस्य च।
तस्मादरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥
गीता-2/27

अर्थात्-जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। अब जो निश्चित ही है तो उसका शोक क्या।

मृत्यु शोक का बड़ा कारण है-स्वार्थ, मृत्यु शोक का दूसरा बड़ा कारण है-अज्ञान, मृत्यु शोक का तीसरा बड़ा कारण है-मोह, ममता।

अतः यजुर्वेद के 40वें अध्याय का प्रथम मन्त्र हमें सन्देश दे रहा है-

ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

भावार्थ-इस गतिशील जगत में जो कुछ भी है वह उस ईश से आच्छादित है, अतः त्याग भावना से भोग करो, लोभ मत करो। यह समस्त धन किसका है-उस परमात्मा का ही तो है।

इसी प्रकार यजुर्वेद के 31वें अध्याय का 18वां मन्त्र हमें दुःखदायी मृत्यु से तरने का मार्ग बता रहा है-

ओ३म् वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्थाविधतेऽयनाय॥

भावार्थ-मैंने जान लिया है कि परमात्मा महान् है, सूर्यवत् प्रकाशमान है, अन्धकार व आज्ञान से परे है, उसी को जानकर मनुष्य दुःखदायी मृत्यु से तर सकता है। मृत्यु से बचने और अभिष्ट स्थान-मोक्ष को प्राप्त करने का इससे भिन्न कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

महाभारत के शान्ति पर्व (श्लोक-16) में मृत्यु शैया पर पड़े भीष्म पितामह ने अपने जीवन की संध्या वेला में महाराज युधिष्ठिर से मृत्यु की विचित्रता के सम्बन्ध में कुछ संकेत करते हुए कहते हैं-

''को हि जानाति कस्याद्य मृत्युः कालो भविष्यति।
युवैव धर्मशीलः स्यादनित्यं खलु जीवितम्॥''

अर्थात्-हे युधिष्ठिर! किसी को कुछ नहीं मालूम कि कब किसका कहां मृत्यु समय आ पहुँचेगा। अतः इस सत्य को समझकर युवावस्था में ही धर्माचरण करो, इस जीवन का कोई भरोसा नहीं। शान्तियज्ञ-प्रेरणा सभा में यज्ञोपरान्त दिलसुखार्य, बिशनसिंह आर्य, सुपरीडेण्ट जयकिशन छीलर, सुनील सांगवान, रामकुमारार्य, सरपंच दलवीर गांधी, स्वामी सच्चीदानन्द आदि ने अपने विचार रखे। बड़े सुपुत्र महेन्द्र सिंह सांगवान को पगड़ी पहनाई गयी। स्वामी धर्ममनि जी महाराज का जीवन मृत्यु पर विशेष व्याख्यान हुआ। बीच के सुपुत्र हवासिंह ने सभा का आतिथ्य सत्कार किया। इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य महानुभाव की पावन उपस्थित में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्राचार्य महेन्द्र सिंह सांगवान ने सभी का धन्यवाद किया।

-ब्र. कर्ण आर्य

हमें वध का पात्र मत बनाओ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

किं न इन्द्र जिघांससि, भ्रातरो मरूतस्तव।
तेभिः कल्पस्व साधुया, मा नः समरणे वधीः॥

ऋग् 1.170.2

ऋषिः **अगस्त्यः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **अनुष्टुप्।**

(**इन्द्र**) हे परमात्मन्! (**किम्**) क्यों (**नः**) हमें (**जिघांससि**) वध का पात्र बनाना चाहते हो? (**मरूतः**) मनुष्य (**तव**) तेरे (**भ्रातरः**) भाई है। (**तेभिः**) उनके साथ (**साधुया**) साधु प्रकार से (**कल्पस्व**) बर्ताव करो। (**नः**) हमें (**समरणे**) संग्राम में (**मा**) मत (**वधीः**) मारो।

हे इन्द्र! हे परमात्मन्। तूम ऐश्वर्यशाली हो, वीर हो, ब्रह्माण्ड के राजा हो। इसमें सन्देह नहीं कि तुम बहुत बड़े हो, महान के महान् हो, किन्तु तुम हमारे ऊपर प्रहार पर प्रहार क्यों किये जा रहे हो? हम एक प्रहार से संभल कर उठ भी नहीं पाते कि तुम दूसरा प्रहार कर देते हो। हमारी पीठ पर कोड़े क्यों बरसाते जा रहे हो? देखो, तुम्हारे दण्ड-प्रहारों से हमारा शरीरं क्षत-विक्षत हो गया है, हमारी इन्द्रियाँ जर्जर हो गई हैं, हमारा मन कराह रहा है, हमारी बुद्धि बेसुध हो गई है, हमारे प्राण क्रन्दन कर रहे हैं, हमारा आत्मा घावों से बेचैन हो तड़प रहा है। कभी तुम अपने ज्वर, अतिसार, कुष्ठ, विशूचिका, राजयक्ष्मा आदि शस्त्रों से हम पर आक्रमण करते हो, कभी हमें दुर्भिक्ष, भूकम्प अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि से संत्रस्त करते हो, कभी हमें भीषण दुर्घटनाओं का शिकार बनाते हो, कभी हमारे स्नेही जनों को हमसे छीनकर हम पर वज्रपात करते हो, कभी हमें काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं की मार से व्याकुल करते हो। हम नन्हें से जीव तुम्हारी लाई हुई इन विपदाओं को भला कैसे सह सकेंगे?

हे भगवन्! हम पर दया करो। हम तुम्हारे भाई हैं, तुम्हारे सबन्धु हैं, तुम्हारे सखा हैं। तुम और हम एक ही जगद्-वृक्ष पर बैठे हुए हैं। अन्तर इतना ही है कि हम इस वृक्ष के फलों को भोग रहे हैं और तुम भोग से स्वतन्त्र होकर, साक्षीमात्र बने हुए हो, तुम सत्, चित्, अनादि और अनन्त हो, तो हम भी सत्, चित्, अनादि और अनन्त हैं। तुम आनन्दरूप हो, हम आनन्दमय बनने की अभिलाषा रखते हैं। भाई होने के नाते हम तुम्हारी सहायता के पात्र हैं। तुम हमारे साथ साधुता का, सहानुभूति का, सहृदयता का व्यवहार करो, संसार के इस विकट संग्राम में तुम हमारा वध करने पर उतारू क्यों हो रहे हो? यह सत्य है कि जो हम भोगते हैं, वह हमारे अपने कर्मों का ही फल है, पर तुम्हारी दया से क्या संभव नहीं है! तुम चाहो तो हमारे जीवन की दिशा ही बदल सकते हो, हमें निर्बुद्धि से सुबुद्धि बना सकते हो, असत्कर्मा से सत्कर्मा बना सकते हो, असुर से देवता बना सकते हो। अतः कृपा करो, बड़े भ्राता होने के नाते छोटे भ्राताओं को अपनी शरण में ले लो, हमारा उद्धार कर दो।

- वेद मञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

होली व दुल्हेंडी को हम कैसे मनायें?

हमारे देश में जहाँ ऐतिहासिक व राष्ट्रीय पर्वो का महत्व है इसके साथ-साथ ऋतुओं के पर्वो का भी बड़ा महत्व है। हमारा देश ही एक ऐसा देश है जिसके अन्दर छः ऋतुओं का होना मिलता है। जैसे बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शीत व हेमन्त। यह होली का पर्व बसन्त ऋतु के आगमन और कार्तिक के महीने में बिजाई कि हुई फसल की पकाई के अवसर पर चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा वाले दिन यह होली का त्यौहार बड़ी धूम-धाम से सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है। यह पर्व दो दिन का होता है। प्रथम दिन तो आग जलाकर पटाके फोड़ कर होली मनाई जाती है। दूसरे दिन रंग वाली होली व गांव में लठमारा दुल्हेंडी मनाई जाती है। स्त्रीयां पुरुषों को लठ मारती हैं और पुरुष महिलाओं पर पानी डालते हैं। अश्लीलता का साम्राज्य प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। उस दिन ऐसा लगता है कि आज लज्जा प्रायः समाप्त हो गई है। बरसाने की लठमार होली जो एक महीना चलती है। इसके बरसाने वाली रासलीला के नाम से भी जाना जाता है। आश्चर्य तो यह है कि यह सब एक आप्त पुरुष योगेश्वर कृष्ण की आड लेकर किया जाता है कि कृष्ण गोपियों संग इसी प्रकार का खेल खेलते थे।

इस पर्व को लेकर कुछ कथाएं भी प्रचलित हैं जिसमें सर्वप्रथम हिरण्यकश्यप और उसकी बहन होलिका की है। प्राचीन काल में अत्याचारी राक्षसराज हिरण्यकश्यप ने तपस्या करके ब्रह्मा से बरदान पा लिया कि संसार का कोई जीव-जन्तु, देवी-देवता, राक्षस या मनुष्य उसे मार ना सके। न ही वह रात में मरे, न दिन में, न ही पृथ्वी, न आकाश, न घर व घर से बहार। यहाँ तक कोई शस्त्र भी उसे ना मार सके। ऐसा वरदान पा कर वह निरंकुश बन बैठा। हिरण्यकश्यप के यहां प्रहलाद जैसा परमात्मा में अटूट विश्वास रखने वालॉ भक्त पुत्र पैदा हुआ। प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था। पिता ने पुत्र को आदेश दिया कि वह उसके अतिरिक्त किसी अन्य की स्तुति व उपासना ना करे। प्रहलाद को यह अच्छा नहीं लगा और उसने अपने पिता के आदेश को मानने से मना कर दिया। परिणामस्वरूप हिरण्यकश्यप उसकी जान लेने पर उतारू हो गया। उसने प्रहलाद को मारने के अनेक उपाय किये। लेकिन वह हर बार बचता रहा।

हिरण्यकश्यप कि बहन होलिका को अग्नि से बचने का वरदान था। उसको वरदान में एक ऐसी चादर मिली हुई थी जो आग में नहीं जलती थी। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन से योजना बनाकर प्रहलाद को अग्नि में जला कर मारने का षडयन्त्र रचा। अग्नि को जलाकर होलिका चादर ओढ़कर प्रहलाद को गोद में उठाकर अग्नि में बैठ गई। प्रभु कृपा से तेज हवा चल पड़ी उसके वेग से चादर उड़ गई और होलिका धूं-धूं करके जलने लगी और वह चदर प्रहलाद के ऊपर गिर पड़ी जिससे प्रहलाद बच गया। उसी दिन से यह होली का त्यौहार मनाया जाने लगा। हिरण्यकश्यप को भी भगवान विष्णु ने नरसिंह का अवतार लेकर मार दिया। दूसरा प्रचलित है कि इसी दिन कृष्ण ने राधा को रंगो से रंग दिया था। उसी रोज से यह रंगों का पर्व कहलाया जाने लगा और खुश होकर प्रेम से सभी परस्पर एक दूसरे को रंगो से रंगते है। तीसरा वर्णन होली का सातवीं शताब्दी का मिलता है जिसको रतनावल के नाम से जाना जाता है। जिसमें वर्णन मिलता है कि यह बेहद सौन्दर्य का पर्व है। इस दिन सुन्दर स्त्रीयों के साथ रंग इत्यादि से खेलने से वर्ष भर की ऊर्जा का संचार हो जाता है। इसी समय से इसे रंगवाली होली का नामकरण हुआ। चौथा जो होली दुल्हेंडी के विषय में अपना मत बताते हैं कि इस पर्व पर सभी के आपस के गिले-सिक्वे दूर हो जाते हैं और आपसी मन-मुटाव दूर होकर आपसी सद्भावना और प्रेम से रहना शुरु कर देते है। इसी उद्देश्य को लेकर सभी धर्म व मत वाले भी एक

दूसरे को हैप्पी होली कहकर रंग लगाते हैं। पांचवां जो विचारधारा इस त्यौहार को लेकर है वह है कि इस दिन अपनी सभी बुराईयों को त्याग कर अर्थात् अग्नि दग्ध करके सदगुणों को ग्रहण करना चाहिए। छठा जो उद्देश्य होली मनाने का है वह है संस्कृत में भुने हुए अनाज को होला कहते हैं इसी का विकृत शब्द होली बना। ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में लगभग-लगभग हमारा देश कृषि प्रधान देश होता था। बसन्त ऋतु की समाप्ति पर जो फसल किसानों के लिए होती थी वह बहुत महत्वपूर्ण होती थी जो कि आज भी है। इस दिन सभी आपस में इकट्ठे होकर सामुहिक बृहद यज्ञ करते थे वनों से बड़े-बड़े विद्वानों को बुलाकर उनके प्रवचन सुनते थे और फिर सामुहिक भोज करके अपने-अपने काम में लग जाते थे। वैदिक रीति से इस पर्व को मनाया जाता था। आज जो इस पर्व के मनाने से फुहड़पन, अश्लिलता, फिजुलखर्जी, आपसी द्वेश-भाव का बढ़ना, शत्रुता पैदा होना, विभिन्न प्रकार के बिषैले कैमिकल युक्त रंगों के प्रयोग से स्वास्थ्य को हानी पहुंचना, ढोंग व पाखंड का फैलना व समय की बर्बादी के सिवाय और कुछ नहीं प्राप्त होता है। अंग्रेज लोग इस दिन को भारतीयों का व्यवहार और खेल देखकर कहते थे कि होली-दुल्हेंडी के पर्व पर प्रत्येक भारतीय पागल हो जाता है। इसलिए वे इसे पागल दिवस के नाम से इस त्यौहार को जानते व मानते थे। इस त्यौहार पर शराब की दुकानों से भी अतिरिक्त बिक्री होती है जो इसका प्रमाण है कि यह पर्व शराब पिलाना भी सिखाता है। अंत में हमारा तो यही निवेदन है कि इस पर्व को हम वैदिक रीति से मनाये बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करें, विद्वानों को बुलाकर सत्संग करवायें और तद्पश्चात अपने-अपने काम में परिश्रम से जुट जाये। बहुत मौज-मस्ती हो ली अब काम पर जुट जाये। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये हमने इस पर्व को मनाना चाहिए। तभी इन पर्वों का महत्व और ठीक-ठीक लाभ हमें मिलता है और हमारी संस्कृति शुद्ध रहती है। इसमें विकृति नहीं आती।

-राजवीर आर्य

आत्म शुद्धि-पथ (मासिक) सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	: बहादुरगढ़
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता (हरियाणा)-124507	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर
6.	प्रकाशक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता (हरियाणा)-124507	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर
9.	सम्पादक का नाम ..	: स्वामी धर्ममुनि
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	सम्पादक का पता,	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
	उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:

मैं स्वामी धर्ममुनि एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 15.3.2019

स्वामी धर्ममुनि (प्रकाशक)

गतांक से आगे

मुक्ति से पुनरावृत्ति

- महात्मा चैतन्यस्वामी

कुछ लोग जीव का ब्रह्म में लीन होने के लिए **मुण्डकोपनिषद्** (3-2-8) का यह कथन प्रस्तुत करते हैं कि-**यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय। तथा विद्वान् नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।** अर्थात् जिस प्रकार नदियाँ बहती-बहती अपने नामरूप को छोड़कर समुद्र में जा मिलती हैं। वैसे ही विद्वान् पुरुष नाम और रूप से छूटकर परात्परब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। इसका समाधान करते हुए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी लिखते हैं-'यहाँ नदियों के समुद्र में मिलने से समझा जाता है कि परमात्मा को प्राप्त होने पर जीवात्मा का अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है। यथार्थ में ऐसा नहीं है। प्रत्येक वस्तु के दो रूप होते हैं-एक उस वस्तु का बाह्य रूप, उसका आकार-प्रकार और रंग रूपादि और दूसरा उसकी आन्तरिक सत्ता जिसे वस्तुतत्व कहते हैं। नामरूप शरीर के होते हैं, जीव के नहीं। शरीर के नामरूप ही जीव का बाह्य रूप हैं। उन्हीं को छोड़ने की बात यहाँ कही गई है। उपनिषद् का भाव यह है कि जिस प्रकार नदियाँ समुद्र में मिलने के पश्चात् अपना गंगा-यमुना का नाम और रूप खो बैठती हैं उसी प्रकार मुक्त जीव अपने बाह्य रूप-शरीर और यज्ञदत्त, देवदत्त आदि नामों को छोड़कर ईश्वर को प्राप्त होता है।

यद्यपि नदियों का नामरूप नहीं रहता तथापि समुद्र में मिलने पर भी उनका वस्तुतत्व जल नष्ट नहीं हो जाता। वह समुद्र में मिलकर उसके जल की मात्रा को बढ़ा देता है। जल नष्ट हो गया होता तो ऐसा न होता। इसी प्रकार अपने नामरूप को खोकर भी मुक्त जीव का वस्तुतत्व (आत्मा) नष्ट नहीं होता। वह परमेश्वर के साथी के रूप में सदा विद्यमान रहता है।'' **ब्रह्म वेदब्रह्मैव भवति।** (मुण्डक. 3-2-9) इसका तात्पर्य भी जीव का ब्रह्म होना नहीं है बल्कि यही है कि मानो वह ब्रह्म ही हो जाता है क्योंकि इसी उपनिषद् में अन्यत्र कहा है-

यदा पश्यः पश्यते रूक्मवर्ण
कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।
तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय निरंजनः
परमं साम्यमुपैति॥

(मुण्डक. 3-1-3)

अर्थात् जब जीवात्मा द्रष्टा बनकर, बृहत् विश्व के कारण इसके स्वामी व कर्त्ता, प्रकाश-स्वरूप पुरुष को देख लेता है, तब वह विद्वान् पुण्य-पाप को छोड़कर, शोक, मोह, राग और द्वेष से अलग होकर, परम समता को प्राप्त कर लेता है... इसी प्रकार **अयमात्मा ब्रह्म** (माण्डुक्य 2), **प्रज्ञानं ब्रह्मा।** (एतरेय 3-3), **तत्वमसि।** (छन्दो 06-11-3), **अहं ब्रह्मास्मि।** (बृहदा. उप. 1-4-10), इनमें भी कहीं पर ब्रह्म और जीव के एक होने की बात नहीं कही गई है बल्कि माण्डुक्योपनिषद् का कथन है कि 'यह सम्पूर्ण विश्व-ब्रह्माण्ड-ब्रह्म है अर्थात् ब्रह्म का विस्तार है। इसी प्रकार में सबका यह पिण्ड भी ब्रह्म है अर्थात् जैसे ब्रह्माण्ड में ब्रह्म का विस्तार विश्व है, वैसे ब्रह्म की भाँति पिण्ड में जीव का विस्तार शरीर है।' एतरेय के उपरोक्त कथन में जीवात्मा की नहीं बल्कि ब्रह्म की बात कही गई है। छान्दोग्योपनिषद् के वचन में श्वेवकेतु को आत्मा का महत्व बताया गया है कि तू अर्थात् तेरा आत्मा तत्व है सत् है। बृहदा. उपनिषद् में जो **अहं ब्रह्मास्मि** आया है उसका भाव महान् होने से है न कि आत्मा और परमात्मा का एक होना...।

ब्रह्ममय होने का यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि जीव ब्रह्म के सदृश हो जाता है। इस सम्बन्ध में भी सत्यार्थप्रकाश (नौवां समुल्लास) में चर्चा करते हुए महर्षि लिखते हैं-प्रश्न-जैसे परमेश्वर नित्यमुक्त पूर्ण सुखी है, वैसे ही जीव भी नित्यमुक्त और सुखी रहेगा, तो कोई भी दोष नहीं आवेगा। उत्तर-परमेश्वर अनन्तस्वरूप सामर्थ्य गुण-कर्म-स्वभाव वाला है, इसलिए वह कभी अविद्या और दुःख बन्धन में नहीं गिर सकता। जीव मुक्त होकर भी शुद्धस्वरूप अल्पज्ञ और परिमित गुण कर्म स्वभाववाला (ही) रहता है, वह परमेश्वर के सदृश कभी नहीं होता। जीवात्मा ब्रह्म के समान हो जाता है, इसे हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि जैसे एक लोहे का गोला तपकर बिल्कुल आग जैसा ही हो जाता है मगर फिर भी उसका अलग अस्तित्व तो बना ही रहता है।

(शेष अगले अंक में)

कुछ जानने योग्य बातें

1. जिसको मिल गया परम् आनन्द; उसे और आनन्द की चाह क्या?
जिसका सदगुरु हो देव दयानन्द, उसको और गुरु की चाह क्या?
2. महाभारत के बाद दयानन्द ही एक ऐसे ऋषि हुए, जिसको सब के प्रति दर्द था।
जिसने दूसरों के लिए जीना, दूसरों के लिए ही मरना, समझा, अपना फर्ज था।
3. सत्य केवल एक ही होता है, बाकी सब इस संसार में असत्य ही होते हैं।
धर्म भी केवल एक वैदिक धर्म ही है, बाकी सब पंथ और मत होते हैं।
4. मत-मतान्तर अधिकतर प्रेम करना नहीं सिखाते, फैलाते है घृणा और द्वेष।
वैदिक धर्म ही एक ऐसा है, जो शुभ कर्म करना सिखलाता है, जिससे मिटते सब क्लेश।।
5. वैदिक धर्म ही एक ऐसा है, जो सब का हित चाहता एक समान है।
मत होता है वही, जो अपने मत वालों का रखता विशेष ध्यान है।।
6. धर्म होता है वही, जिससे जीवन होता उन्नत और अन्त में मिलता मोक्ष धाम है।
वैदिक धर्म ही एक ऐसा है, जो सिखलाता करो जीवन में सदा परोपकारी काम है।।
7. आर्य होता है वही, जिसका जीवन पवित्र, निर्मल और होता उदार।
आर्य होकर जो छल, छपट, बेईमानी करे, उसका आर्य होना धिक्कार है।।
8. आर्य होता है वही, जिसमें मनु के बताए दस गुणों में, धैर्य गुण प्रधान है।
बात-बात में जो गुस्सा, पक्षपात, ईर्ष्या रखता, वह आर्य तो है ही नहीं, होता नीच इंसान है।।
9. आर्य होता है वही, जो वचन, कर्म, समय व कर्त्तव्य का रखता हमेशा पूरा ध्यान है।
जिसके जीवन में हो संयम, सदाचार, कर्त्तव्य के प्रति हो निष्ठा, जो आर्य का सही पहचान है।
10. सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय करना हैं ये आर्यों के नित्यकर्म, पर समाजसेवी होना प्रधान है।
जीवन में अधिक से अधिक सद्गुणों का धारण करना ही, आर्य समाज की होनी शान है।
11. ईश्वर विश्वास और प्राप्ति में, मूर्त्ति-पूजा राह नहीं, पर रोड़ा है।
आलसी के पास सम्पन्नता तो दूर रही, खाने का भी रहता तोड़ा है।।
12. धनी है वही, जिसका धन दूसरों के काज में लगे।
जीवन है वही जिसका जीवन आर्य-समाज में लगे।।
13. जीवन मैंने बहुत पढ़े, फिर जीवन पढ़ महर्षि का।
उनके जीवन के आगे, मुझे अच्छा न लगा किसी का।।
14. ऋषि वर तेरा वेदों का सन्देश देना अनुपम और अनोखा था।
मानव को वह ईश्वरीय ज्ञान मिल गया, जिसका वह सदियों से भूखा था।।
15. ऋषिवर! हम आपके कृतज्ञ हैं किया आपने ईश्वरीय ज्ञान वेदों का पुनः प्रकाश।
हम अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड में फंसे हुए थे, निकाला हमें, नहीं तो हो जाता हमारा नाश।।
16. ईश्वर केवल एक है, बाकी राम, कृष्ण, मोहम्मद, बुद्ध, ईसा, जो थे पुरुष महान्।।
महर्षि ने वेदों से जान दिया हमें ज्ञान, करो केवल ईश्वर की ही उपासना व ध्यान।।

17. ईश्वर की सीधी उपासना करों, महर्षि ने बताया, पाकर वेदों से ज्ञान।
वेद ही एक ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनके अनुसार चलने से, मिलेगी मुक्ति, यह निश्चित जान।।

18. वेद ही एक ऐसे ग्रन्थ हैं, जो सिखलाते करना अच्छे, प्रभु, हितकारी कर्म।
बाकी सब ऐसे ग्रन्थ हैं, जो फैलाते अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड और भ्रम।।

19. वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, हैं तो कई पर एक को ही समझो सही प्रमाण।
ईश्वर की बनाई सृष्टि में वेदों, में है एकता, यही है ईश्वर ने ही किया वेदों का निर्माण।

20. चारों वेद, चार ऋषियों ने बनाये, अग्नि, वायु, आदित्य, अंगीरा जिनके थे नाम।
क्रमशः ऋग्, यजु, साम, अथर्व, बनाये, जिनसे मिलता जीवन जीने का सच्चा ज्ञान।।

21. सृष्टिकर्त्ता एक ईश्वर ही है, अन्य राम, कृष्ण मोहम्मद बुद्ध, ईसा थे, पुरूष महान्।
उसी की उपासना सीधी करो, नहीं जरूरत बिचौलिया की, बताया महर्षि ने वेदों से जान।।

C/o गोविन्द राम आर्य अण्ड सन्स
180 M.G. Road (V Floor), Kolkata-70007
Mob.: 9830135794, Ph.: 22183825 (033)

वही जीवन सुख पायेगा

ऋषि राम कुमार

माता-पिता की सेवा करलो वही जग में नाम कमायेगा,
बाकी जो आया है जग में खाली हाथ ही जायेगा,
माता-पिता के आशीर्वाद से सब कुछ तुम्हें मिल जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को वही जीवन सुख पायेगा।

तुम्हें बड़ा करने के लिए वो अपने आप को भूल गये,
कितनी खुशी मिली थी उनको, जब तुम पढ़ने स्कूल गये,
संसार के चक्कर में मत पड़ना, संसार तुम्हें भर मायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को वही जीवन सुख पायेगा।

कर्म करो जीवन में तुम, कर्म ही सबसे महान है
सबका भला सोचेगा, वही सच्चा इंसान है,
भूल गया जो माता-पिता को जीवन में दुःख पायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को वही जीवन सुख पायेगा।

झूठ फरेब के धंधों से तुम्हें दूर रहना होगा,
चालबाज इस दुनिया में, सावधान रहना होगा,
जाना तुझको खाली हाथ कुछ साथ नहीं जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को, वही जीवन सुख पायेगा।।

बुरा न सोचो बुरा न देखो, बुरा न करना कभी भी तुम,
झूठ से तुम दूर ही रहना, सच्चाई न छोड़ना कभी तुम,
मानवं, धर्म का पहन ले चोला, सब कुछ तू पा जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को, वही जीवन सुख पायेगा।

- **ऋषि राम कुमार**, 112 सैक्टर-5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा)-122001, मो. 9968460312

असीमित अधिकार अराजकता को जन्म देते हैं

- जगदीश वानप्रस्थ

किसी कवि ने कहा है-

अति का भला न बोलना अति की भली न चुप्प।
अति का भला न बरसना अति की भली न धुप्प॥
अति रूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।
अति दानं बलिबधवा अति सर्वत्र वर्जयेत्॥

अर्थात् अत्यधिक सुन्दरता के कारण सीता का हरण हुआ, अत्यन्त गर्व के कारण रावण मारा गया, बहुत अधिक दान देने के कारण राजा बलि को बन्धन में बन्धना पड़ा, इसलिए 'अति' अर्थात् अपनी मर्यादा (सीमा) का उलंघन कभी नहीं करना चाहिए।

अधिकारों को मर्यादा में बांधने के लिए कर्तव्यों का बन्धन होना चाहिए। जो संविधान निर्माताओं ने नहीं बांधा। संविधान के लागू होने के 26 वर्ष बाद इस ओर ध्यान गया और संविधान का संशोधन करके उसमें मूल कर्तव्यों को जोड़ा गया। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। आज जो देश में अराजकता, अलगाववाद, आतंकवाद और सम्प्रदायवाद जोर पकड़ रहा है उसका कारण इन्हीं अधिकारों की आड में बच्चों का ब्रेनवाश करके उनके दिल और दिमाग में साम्प्रायिक शिक्षा भरने का परिणाम है। यदि पूरे देश में एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम होता तो स्थिति कुछ और ही होती। हमारे देश की परम्परा में सर्वप्रथम बच्चों को कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाया जाता है। यथा-

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

अर्थात् वे माता और पिता अपने सन्तानों के महाशत्रु हैं जिन्होंने उनको उत्तम शिक्षा नहीं दिलाई क्योंकि वे विद्याहीन बालक विद्वानों की सभा में ऐसे ही तिरस्कृत होते हैं जैसे हंसो के बीच में बगुला। रंग तो बगुले का भी सफेद होता है परन्तु हंस जैसे गुण नहीं होते। बगुला मछलियाँ खाता है और हंस मोती चुगता है।

माता न पालयेद् बाल्ये पिता साधु न शिक्षयेत्।
राजा यदि हरेद्वित्त का तत्र परिवेदना॥

अर्थात् जहाँ पर बाल्यकाल में माता पालन न करे, पिता अच्छी प्रकार शिक्षा न दिलाये और राजा प्रजा का धन लूटता रहे वहाँ रोने-धोने से क्या लाभ?

अविवेकी यत्र राजा सभ्या यत्र तु पाक्षिकाः।
सन्मार्गोज्झित विद्वांसः साक्षिणोऽनृतवादिनः॥
दुरात्मना च प्राबल्यं स्त्रीणं नीचजनस्य च।
तत्र नेच्छेद्वनं मानं वसति चापि जीवितम्॥

अर्थात् जहाँ राजा विवेकहीन हो, राजसभा के सभासद पक्षपाती हों, पण्डित लोग आचारहीन हों, साक्षी (गवाह) झूठ बोलने वाले हों, जहाँ दुष्टों, स्त्रियों और नीच जनों की प्रबलता हो, ऐसे स्थान पर रहने से धन, मान, निवास और जीवन की रक्षा होगी इसकी आशा कभी न करें। रहने की इच्छा भी न करें। महाभारत के युद्ध में एक ओर जहाँ दुर्योधन अधिकारों के लिए लड़ रहा था वहीं दूसरी ओर अर्जुन कर्त्तव्य पालन करने के लिए लड़ रहा था। अधिकारों की भूख मनुष्य को अधर्म मार्ग की ओर ले जाती है। जबकि कर्तव्य पालन करता हुआ एक सैनिक सूर्य मण्डल को भेद कर स्वर्ग की ओर प्रस्थान करता है। श्रीमद् भगवद्गीता का सार कर्तव्य परायणता ही है। श्रीकृष्ण जी कहते है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु र्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थात् तेरा अधिकार केवल कर्म करने में है, फलों पर कभी नहीं। तू कर्मों के फलों का हेतु मत हो, परन्तु अकर्म में भी तेरा फंसना न होवे॥ भारत की प्राचीन राजनीति में कहा गया है-

उद्यम्य शस्त्रमायान्तं भ्रूणमप्याततायिनम्।
निहत्य भ्रूणहा न स्यादहत्वा भ्रूणहा भवेत्॥

अर्थात् शस्त्र उठाकर मारने के लिए आते हुए आततायी बालक को भी मार देने से मनुष्य भ्रूणहत्यारा नहीं होता अपितु उसे न मारने से उसे भ्रूणहत्या का पाप लगता है।

अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। परमात्मा की इस सृष्टि में परमाणु से लेकर महत् तक सभी पदार्थ मर्यादा में रहकर अपना कार्य कर रहे हैं।

(शेष अगले अंक में)

संयुक्त परिवार में हो रहा विघटन, बिखराव

समाज परिवर्तनशील होता है। यहां नित नए परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों में से एक है पारिवारिक संबंधों से जुड़े बदलाव। बदलते दौर में समाज में कुछ चीजें, बातें, आदतें और जीवनशैली बदली है तो दूसरी ओर इन संबंधों का छीजना यानी अपनापन भी घटते देखा जा रहा है। इन हालात में सहज ही यह सवाल उठता है कि यह परिवर्तन आने वाली पीढ़ी के लिए लाभदायक होगा? निश्चय ही ऐसा तो नहीं है। इसे ठीक करने की जिम्मेदारी आज हमारी है ताकि भविष्य इसके लिए तैयार रहे।

भौतिक सुख-सुविधाओं में फंसकर मनुष्य परिवार और गृहरचना की उपेक्षा कर रहा है, जिसका परिणाम संयुक्त परिवारों की एकल परिवार की श्रेणी में आना और रिश्तों में बढ़ती दूरी व विवादों का उत्पन्न होना है। आज के परिदृश्य में समाज की बिगड़ती स्थिति के कारण मनुष्य का सुख व शांति दोनों ही छिन गए हैं। इसका मुख्य कारण है कि मनुष्य अब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का पूर्ण अनुसरण नहीं कर रहा है, जबकि ये चारों पुरुषार्थ के अभिन्न अंग हैं। इसके महत्व को अनदेखा कर इन चारों अंगों में से वह सिर्फ अर्थ व काम तक ही सीमित रह गया है। हमारा परिवार मंगलमय हो, आनंदमय हो, नाचता हुआ हो, खिलाता हुआ हो, स्वर्ग जैसा हो, फूल जैसा खिला हो तो ही हमारा परिवर मंगलमय परिवार बन सकता है, लेकिन आज हमारे परिवार में अशांति, कलह, दुख, तनाव अधिक है। परिवार में कोई भी बड़ों और छोटों का आदर नहीं करता। आज हमारे घर तो बड़े-बड़े हैं, लेकिन घर वालों के दिल एक-दूसरे के प्रति छोटे होते जा रहे हैं। परिवारों में प्रेम और स्नेह के बजाय ईर्ष्या और घृणा सबसे अधिक होती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी की सोच बदलती जा रही है। आज युवा पीढ़ी हम दो-हमारे दो की भावना में जीवित है। यही कारण है कि युवा पीढ़ी आज संयुक्त परिवारों की डोर छोड़ एकल परिवार की ओर रूख कर रही हैं, जिससे परिवार का अमंगल होता जा रहा है। आज परिवारों में प्रेम, स्नेह और विश्वास का भाव कम होता जा रहा है, जिससे आज समाज में संयुक्त परिवार एकल परिवार का रूप लेते जा रहे हैं। उन्होंने बताया माता-पिता एवं वृद्धजन की सेवा, एक समय परिवार के सभी सदस्यों का साथ में भोजन, स्वच्छ मन से भक्तिमय होकर तीज त्यौहार मनाना, धर्म की सुंगध फैलाना आदि मंगलमय परिवार के लक्षण हैं।

इसका कारण आज का आधुनिक युग है। इस आधुनिक युग को हमने विज्ञान के युग की संज्ञा दी है। इस वैज्ञानिक युग में मानव मशीन बन गया है। मशीन बनने से उसके अंदर की करूणा की भावना समाप्त हो गई है। इसी भावना के समाप्त होने पर एकल परिवार अस्तित्व में आए। हम केवल इस बात को महसूस करते हैं कि ये सब करना उनका कर्तव्य था लेकिन मां-बाप के प्रति हमारी यह धारणा क्या सही है, शायद नहीं। मां-बाप हमारे लिए एक माली के समान हैं तथा हम उनकी बगिया है। माली अपने हाथों से एक पौधा लगाता है तथा उस पौधे का पूरा ध्यान रख कर इसे एक फलदायी व उपयोगी वृक्ष बनाने में जुटा रहता है, यह सोच कर कि एक दिन वह वृक्ष बड़ा होगा जिसकी छांव में वह (माली) सुकून से अपने बुढ़ापे को व्यतीत करेगा। क्या आप जानते हैं कि वह माली और वृक्ष कौन हैं? हमारे मां-बाप। परिवार में बड़े बुजुर्गों की उपस्थिति सभी सदस्यों को मर्यादित व संस्कारी बनाती है। इस विषय में यदि यह कथन कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, **''पेड़ बूढ़ा ही सही, आंगन में रहने दो, फल न सही, छांव तो अवश्य देगा।''**

उसी प्रकार माता-पिता बूढ़े ही सही लेकिन उन्हें घर में ही रहने दो। वे दौलत तो नहीं दे सकते लेकिन आपके बच्चों को अच्छे संस्कार अवश्य दे सकते हैं। आज हम आधुनिकता का सही अर्थ ग्रहण नहीं कर सके। हम केवल आधुनिकता में **''यूज एंड थ्रो''** के सिद्धांत को अपना रहे हैं। ऐसे व्यक्तियों को रिश्ते घर में प्रयोग होने वाली वस्तु लगने लगे हैं। आज वृद्धाश्रम बुजुर्गों से भरे पड़े हैं, उनकी तरसती निगाह किसी का इंतजार कर रही हैं कि शायद उनसे मिलने कोई अपना आ जाए। उन्हें पैसा नहीं चाहिए, केवल सहानुभूति चाहिए, अपनापन चाहिए लेकिन हजारों में शायद ही कोई विरला होता है जो अंजान व बेनाम मौत की गोद में न जाए।

-साभार हिन्दू सभा वार्ता से

(शेष अगले अंक में)

नजला (जुकाम)

नजला या जुकाम एक ऐसा रोग है जो किसी को भी हो सकता है। यह रोग वैसे तो ऋतुओं के आने-जाने के समय होता है लेकिन वर्षा, जाड़े और दो ऋतुओं के बीच के दिनों में ज्यादातर होता है। दूषित वातावरण, धूल-धुएं के फैलने वाले स्थान तथा बर्फीले स्थान में यह रोग बगैर किसी शिकायत के भी हो जाता है। गले के अन्य रोग, नाक की बीमारियां, वायु प्रकोप तथा क्षय आदि इस रोग की मदद करते हैं। फलतः यह रोग तेजी से फैलता है।

पहचानः शुरु में नाक की खुश्की मालूम पड़ती है। बाद में छींक, आने लगती हैं। आंख-नाक से पानी निकलना शुरु हो जाता है। जब श्लेष्मा (पानी) गले से नीचे उतरकर पेट में चला जाता है तो खांसी बन जाती है। कफ आने लगता है। कान बंद से हो जाते है। माथा भारी और आंखे लाल हो जाती है। बार-बार नाक बंद होने के कारण सांस लेने में परेशानी होती हैं।

नुस्खे-❑ अदरक के छोटे-छोटे टुकड़ों को देसी घी में भून लें। फिर उसे दिन में चार-पांच कुचलकर खा जाएं। इससे जुकाम बह जाएगा और रोगी को शान्ति मिलेगी। ❑ 10 ग्राम हल्दी का चूर्ण और 10 ग्राम अजवायन को एक कप पानी में आंच पर पकाएं। जब पानी जलकर आधा रह जाए तो उसमें जरा-सा गुड़ मिला लें। इसे छानकर दिन में तीन बार पिएं। दो दिन में जुकाम छूमंतर हो जाएगा। ❑ लहसुन की दो पूतियों को आग में भूनकर पीस लें। फिर चूर्ण को शहद के साथ चाटें। ❑ कलौंची का चूर्ण बनाकर पोटली में बांध लें। फिर इसे बार-बार सूंघे। नाक में पानी आना रूक जाएगा। ❑ जायफल को पानी में घिसकर चंदन की तरह माथे पर नाक पर लगाए। चार कालीमिर्च-सबको मोटा पीसकर एक कप पानी में आग पर चढ़ा दें। जब पानी जलकर आधा रह जाए तो छानकर उसमें जरा-सा गुड़ या चीनी डालकर गरम-गरम पी जाएं। ❑ दोनों नथुनों में गोमूत्र (ताजा) की दो-दो बूंदे सुबह-शाम टपकाएं। ❑ पांच मुनक्के एक कप पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाए तो मुनक्के निकालकर चबा जाएं। फिर घूंट-घूंट पानी पी लें। जुकाम भाग जाएगा। ❑ एक चम्मच अदरक के रस में आधा चम्मच शहद मिलाकर चाट लें। ❑ दालचीनी तथा जायफल-दोनों एक चम्मच की मात्रा में चूर्ण के रूप में लेनें से जुकाम फुर्र हो जाता है। ❑ पके हुए अमरूद को उपलों में भूनकर खाएं। ❑ मूली के बीजों का चूर्ण आधा चम्मच शहद के साथ चाटें। ❑ 12. तुलसी के आठ पत्ते और चार कालीमिर्च-दोनों की चटनी बनाकर गुड़ के साथ खाएं। ❑ अनाकर के पत्तों को पीस लें। फिर उसमें थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर 5 ग्राम की मात्रा में खाएं। ❑ चिरायता, सोंठ, अडूसे की जड़ तथा कटेरी की जड़-सब 5-5 ग्राम लेकर काढ़ा बनाकर पिएं। ❑ एक कप गाय के दूध में एक चम्मच पिसी हुई हल्दी तथा थोड़ी सी चीनी मिलाकर पी जाएं। ❑ नाक के बाहर तथा नथुनों के भीतर सरसों का तेल थोड़ी-थोड़ी देर बाद लगाएं। जुकाम का पानी बह जाएगा। ❑ नीम के बीजों की गिरी, रीठे के बीज, सफेद कनेर का फूल तथा ग्वारपाठा-सबको पीसकर जरा-सा सेंधा नमक डालकर खा जाएं। ❑ आठ पत्तियां पुदीना, पांच दाने कालीमिर्च तथा एक चुटकी नमक-सबको चाय की तरह उबालकर पी जाएं। ❑ नींबू के छिलके को पीसकर चटनी बना लें। उसमें जरा-सा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें। ❑ हींग को पानी में घोलकर विक्स की तरह बार-बार सूंघने से जुकाम बह जाता है। ❑ चार चम्मच सौंफ, चार लौंग और पांच कालीमिर्च को एक कप पानी में उबालें। चौथाई कप रह जाने पर बूरा मिलाकर घूंट-घूंट पिएं।

क्या खाएं क्या नहीं-बहुत ठंडी और बहुत गरम तासीर वाली चीजें न खाएं। चाय, दूध, अमरूद और पपीता, पालक मेथी आदि की सब्जी, गेहूं तथा जौ की चपाती खाएं। रात को बंद कमरे में लेटकर अदरक, तुलसी और कालीमिर्च का काढ़ा पीकर सो जाएं। गुनगुना पानी पीएं। मट्ठा, छाछ, दही, बर्फ, ठंडा पानी, आलू, करेला, बैंगन, फूलगोभी, मूली, टमाटर, सेब, नाशपाती, केला आदि का सेवन न करें। यदि जुकाम के साथ पेट में भारीपन मालूम पड़े तो मूंग की दाल की खिचड़ी खाएं।

- साभार हिन्दू सभा वार्ता से

आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है

- रामफल सिंह आर्य, म.न. 78/एस-4, बी.एस.एल. कॉलोनी, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी, हिमाचल प्रदेश-175019, मो. 09418477714

यह बात मन में अवश्य रखिये कि आपकी संतानें आपके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे बन गई तो जानिये सब बन गया और कहीं बिगड़ गई तो लाख धन दौलत हो, सम्पत्ति हो, बेकार हो जाती है। यदि हमारे बच्चे हमारा सम्मान करना सीख गये तो जीवन सफल हो जाता है, नहीं तो आज नर्क तो बनता ही जा रहा है।

घर में खेलते-कूदते बच्चे किसको अच्छे नहीं लगते। अपने भोले-भाले चेहरों, अबोध चेष्टाओं और किलकारियों से वे सभी को बरबस अपनी ओर खींच लेते हैं। उनकी भोली और निश्छल बातें रोते हुए व्यक्ति को भी हंसा देती हैं। वे माता-पिता के तो प्रिय होते ही हैं इसके साथ-साथ अन्य सदस्य भी उन्हें लाड़-चाव से रखते हैं। यदि संयुक्त परिवार हुआ तो दादा-दादी, ताऊ-चाचा आदि भी उनके लाड़-लड़ाते रहते हैं। प्यार, ममता तो परमपिता परमेश्वर की देन है। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों में भी यह वृत्ति देखने में आती है। यहाँ तक कि भयंकर हिंसक जीव जन्तु भी अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। संतान के प्रति माता-पिता का प्यार एक अत्यन्त स्वाभाविक बात है क्योंकि संतान माता-पिता के अंग-अंग का निचोड़ होती है। आचार्य यास्क लिखते हैं:-

अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम्॥

(निरूक्त 3/4)

यदि सन्तान के प्रति इतना प्यार, इतनी ममता न हो तो सम्भवतः पुत्र और माता-पिता के बीच इतना गहरा व अटूट सम्बन्ध बन ही न पाये।

लेकिन प्रायः देखने में आता है कि सन्तान के प्रति माता-पिता का प्यार कई बार सीमा का अतिक्रमण कर जाता है और वे बच्चों की त्रुटियों को अनदेखा कर जाते हैं जिससे बच्चों का कोमल मस्तिष्क उन त्रुटियों का भण्डार बनता जाता है। उनके स्वभाव में दोष आने लगते हैं और परिपक्व होने पर वही बच्चे माता-पिता के लिए सिरदर्द बन जाते हैं। कई माता-पिता और परिवार के अन्य लोग स्वयं ही उन्हें कुछ ऐसी बातें बचपन में सिखाते हैं जो उनके कोमल मन पर बुरा प्रभाव डालती है। हमने कितने ही माता-पिता ऐसे देखे हैं जो अपने बच्चों को कहते हैं कि अमुक व्यक्ति को आंख मार दो, उसे 'फ्लाईंग किस' कर दो, इसे धमका दो, उसे 'हप' कर दो। कई बार-बार बच्चे से कहते हैं-बताओ राजा बेटा किससे शादी करेगा? राजा बेटा किससे प्यार करता है? इत्यादि-इत्यादि। छोटे मासूम बच्चों को इन बातों का कोई पता नहीं होता, परन्तु बार-बार एक ही प्रकार की बातें दोहराने से उनका कोमल मस्तिष्क प्रभावित अवश्य होता है। पहले-पहले तो माता-पिता को उनकी भोली बातें अच्छी लगती हैं, उनके लिए बच्चों की चेष्टायें मनोविनोद का विषय होती हैं, फिर धीरे-धीरे बच्चों में ये बातें एक दोष के रूप में पनपने लगती हैं। फिर वे शिकायत करते हैं कि बच्चे हमारा कहना नहीं मानते।

महर्षि दयानन्द जी महाराज अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं-'बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा दे, जिससे संतान सभ्य और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें।

माता-पिता प्रारम्भ से यह ध्यान रखें कि बच्चा कहीं कोई दोषयुक्त बात तो नहीं सीख रहा? या वे स्वयं तो कोई ऐसी बात नहीं सिखा रहे हैं जो उसके व्यवहार एवं चरित्र को बिगाड़ने वाली है। बच्चों से प्रेम कीजिए अवश्य, लेकिन केवल अंधा प्रेम नहीं। उन्हें अच्छी आदतें सिखाकर योग्य अर्थात् सभ्य, नम्र तथा सुशील बनाना भी तो एक महान् कर्त्तव्य है।

बच्चों की अधिक लाड़ना करके तथा उनके दोषों को अनदेखा करके मोहवश उन्हें न डांटना, फटकारना उन्हें अनुशासनहीन व दुष्टवृत्ति वाला बना देते हैं, इसके भयंकर परिणाम जहां माता-पिता व

परिवार को भोगने पड़ते हैं, वहीं कई बार समाज व राष्ट्र के लिए भी घातक सिद्ध होते हैं। इसके लिए बच्चे प्रायः इतने दोषी नहीं हैं जितने कि माता-पिता। इसलिए प्यार के साथ-साथ यह भी अति आवश्यक है कि बच्चों के दुष्ट आचरणों पर भी कड़ी दृष्टि रखी जाये और जैसे ही कोई त्रुटि बच्चों की देखें उसे तुरन्त रोकें और प्यार से उसे समझायें। यदि प्यार से वे न मानें, जिद करें तो उनकी ताड़ना भी अवश्य करें। यदि आवश्यकता हो तो उन्हें उचित दण्ड भी देवें। द्वितीय समुल्लास में ही ऋषिवर व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण देकर फिर लिखते हैं-

सामृतैः पाणिभिर्घ्नति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताड़नाश्रयिणो गुणाः॥

अर्थात् जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने संतान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं, और जो संतानों और शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने संतानों और शिष्यों को मानो विष पिला के नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से संतान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं, परन्तु माता-पिता और अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रखें।

संभव है कि आज कुछ पढ़े-लिखे तथाकथित प्रगतिशील लोग ऊपर की बातों से सहमत न हों परन्तु उनकी समझ में ये बातें उस समय आती हैं जब पानी सिर से गुजर चुका होता है। हमारे पड़ोस में ही एक व्यक्ति रहता था। उनका एक ही लड़का था, जिसे वे बहुत प्यार से रखते थे। अधिक प्यार के कारण वह कुछ ज्यादा ही सिर चढ़ हो गया। कोई यदि उसे कुछ कह देता तो तुरन्त उसके घर लड़ने पहुंच जाते थे। इससे उसके हौंसले और बढ़ जाते थे। एक दिन सायंकाल को उनके घर से ऊँची-ऊँची आवाजें आनी शुरु हो गई। कुछ उठा पटक होने लगी तो मैं दौड़कर उनके घर गया। जो दृश्य वहाँ पर देखा वह चौंकाने वाला था। पुत्र ने पिता को धरती पर गिरा रखा था और उसे दबोच कर उसकी पिटाई कर रहा था। बड़ी मुश्किल से उसे छुड़वाया और लड़के को भी धमकाया कि मूर्ख! यह क्या कर रहा है।

(शेष अगले अंक में)

हंसो और हंसाओ

- **रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़**

- **दो बच्चे**- आपस में बात कर रहे थे
  पहला बच्चा-मेरे दादा जी 50 लाख रूपये छोड़कर मरे थे।
  दूसरा बच्चा-इसमें कौन सी बड़ी बात है? मेरे दादा जी पूरी दुनिया छोड़कर मरे थे।
- **पहला दोस्त**-यार, मछली खायेगा?
  दूसरा दोस्त-नहीं यार उसमें कांटे होते हैं।
  पहला दोस्त-अरे यार चप्पल पहन कर खा लेगें।
- **नरेश**-सर मैंने ऐसी चीज बनाई है कि आप दीवार के आर-पार देख सकते हैं।
  टीचर-अरे वाह..... क्या चीज है वो
  नरेश-छेद
- युद्ध में **पप्पू** ने बुलेटप्रुफ जैकेट की जगह मच्छरदानी पहनी।
  चप्पू जी ने पूछा-ये क्यों पहना
  पप्पू-यार जिसमें मच्छर नहीं घूस सकता वहाँ गोली कैसे घुसेगी।
- **हरिया**-जानते हो ताजमहल बनवाने से पहले वहाँ क्या था
  धनिया-नहीं जानता बताओ तो क्या था
  हरिया-अरे यार बिल्कुल खाली जगह थी।
- **पहली मक्खी** गंजे के सर पर बैठी थी
  दूसरी मक्खी ने कहा-वाह क्या घर मिला है।
  पहली मक्खी-नहीं रे अभी तो सिर्फ प्लाट खरीदा है।
- एक बार **दो चुहे** दंड बैठक मार रहे थे हाथी आया और बोला-यार मुझे भी दंड बैठक मारना सिखा दो ना
  चुहे-तू रहने दे तेरी पिन्डी सुज जायेगी।

- आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - **विक्रम देव आर्य**

फलित ज्योतिष की अमान्य मान्यताओं से मानव जगत से सबसे बड़ा भ्रामिक वैचारिक शोषण

- पं. उम्मेदसिंह विशारद

उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे महान समाजिक सुधारक आर्ष और अनार्ष मान्यताओं का रहस्य बताने वाले युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुल्लास के प्रश्नोत्तर में लिखते हैं।

प्रश्न.तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उत्तर- नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह सब झूठी है।

फलित ज्योतिष के द्वारा अवैदिक व सृष्टिक्रम विज्ञान के अमान्य अनार्ष मान्यताओं को चतुर लोगों द्वारा भारत की जनता का वैचारिक शोषण करके अपना मनोरथ तो पूर्ण किया ही है, अपितु भारत वर्ष को गुलामी के दलदल में धकेलने का भी कार्य किया है। बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि यह पाखण्ड इस वैज्ञानिक युग में भी दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। स्वार्थी और चतुर किन्तु ज्ञान विज्ञान से शून्य लोग भोली-भाली जनता को फलित ज्योतिष की आड़ में कई प्रकार से लूट रहे हैं।

इस माह का लेख फलित ज्योतिष पर लिखने का मन बना इसलिए प्रस्तुत लेख में क्लेवर क्षमता के अनुसार कई उदाहरण सहित लिखा जा रहा है। विस्तार आप स्वयं करके आगे भी प्रेषित करने की कृपा करें।

फलित ज्योतिष का पाखण्ड

कुतं मे दक्षिणेहस्ते जयोमेसव्य आहितः (अथर्व)

ईश्वरीय व्यवस्था में मानव कर्म करने के लिए स्वतन्त्र है और क्रमानुसार फल प्राप्ति ईश्वरीय व्यवस्था में होती है। मानव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल उसको ईश्वर द्वारा दिया जाता है। अतः मनुष्यों को अपने दिल में भरोसा रखना चाहिए कि यदि पुरुषार्थ मेरे दायें हाथ में है तो सफलता मेरे बायें हाथ में है। अतः संसार में जितने भी कार्य सिद्ध होते हैं वह पुरुषार्थ से होते हैं। मनुष्य के जीवन में अगले क्षण क्या होने वाला है वह नहीं जानता है। ज्योतिषियों द्वारा फलित आश्वासन भ्रामिक है यह केवल मनुष्य को गुमराह करने वाला है।

उदाहरणः- भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डालने वाले लुटेरे बाबर की जीवन की एक घटना है। जब वह भारत पर आक्रमण करने आया तो भारत के प्रसिद्ध भविष्य बताने वाले ज्योतिष ने बाबर से कहा कि अभी आप भारत पर आक्रमण न करें इससे आपको सफलता नहीं मिलेगी। बाबर ने पूछा आपको यह जानकारी कैसे मिली। ज्योतिषी ने कहा हमारे फलित ज्योतिष शास्त्र में लिखा है। बाबर ने कुछ सोचकर कहा ज्योतिषी जी आप यह भी जानते होंगे कि आप और कितने वर्ष जिन्दा रहोगे, ज्योतिषी ने कहा अभी मैं 37 वर्ष और जिन्दा रहूंगा, बाबर ने मयान से तलवार निकाली और एक ही झटके में ज्योतिष का सिर धड से अलग कर दिया और कहा कि जिसको अपने अगले क्षण का पता नहीं ऐसे पाखण्डी पर क्या विश्वास किया जा सकता है और उस ऐतिहासिक युद्ध में बाबर की विजय हुई और ज्योतिषी की बात मिथ्या हुई।

उदाहरण 2: आप कल्पना करो कि मेरे सामने एक भोजन का थाल पड़ा है और उसमें दस कटोरियों है अलग-अलग व्यंजनों की है। पहले मैं कौन सी कटोरी का पदार्थ खाऊंगा ज्योतिषी तो क्या स्वयं ईश्वर भी नहीं बता सकते हैं पहले मैं कौन सी चीज खाऊँगा क्योंकि कर्म करना मेरे स्वतन्त्रता के अधिकार में है।

उदाहरण 3: एक ब्राह्मण काशी में दस वर्ष ज्योतिष विद्या पढ़के अपने गाँव में आया। गाँव का एक उजट जाट लाठी लिये अपने खेत में जा रहा था, नमस्ते पश्चात् जाट ने पूछा आप कहां से आ रहे हैं, ब्राह्मण बोला मैं दस वर्ष काशी से ज्योतिष विद्या पढ़ के आ रहा हूँ। जाट ने पूछा महाराज ज्योतिष क्या होता है। ब्राह्मण ने बताया हम अगले क्षण आने वाली बातों को पहले बता देते हैं। जाट ने पूछा महाराज मैं पूछूं तो आप बतायेंगे, क्यों नहीं अवश्य पूछिये। ब्राह्मण

बोला मैं उच्च कोटि का भविष्य वक्ता बन गया हूँ। अब जाट ने कन्धे से लाठी उठाकर घुमाकर पूछा बता मैं तेरे इस लाठी को कहाँ मारूंगा। यह सुनकर ब्राह्मण नीचे ऊपर देखने लगा, यदि मैंने कहा कि सिर पे मारेगा तो वह पैरों पर ठोकेगा यदि पैरों पर कहा तो यह सिर पर ठोकेगा। ब्राह्मण सिर झुका कर नीचे देखने लगा। इसलिए फलित ज्योतिष पाखण्ड है।

नव ग्रहों का मानव पर लगाने का भ्रम

प्रश्न (सत्यार्थ प्रकाश): जब किसी गृहस्थ ज्योतिर्विदाभास के पास जाके कहते हैं महाराज इसको क्या है? तब वह कहते हैं इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े है। जो तुम इनकी शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नहीं तो बहुत पीड़ित और मर जाय तो भी आश्चर्य नहीं है।

उत्तर: कहिए ज्योतिर्विद! जैसी यह पृथ्वी जड है, वैसे ही सूर्य आदि लोक है। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ नहीं कर सकते। क्या ये चेतन है जो क्रोधित होके दु:ख और शान्त होकर सुख दे सकें।

भोली-भाली जनता को ठगने के लिए ग्रहों का प्रकोप का डर उनके दिलों में बिठा रखा है। प्रत्येक ग्रह जड है और पृथ्वी से लाखों गुना बड़े है फिर वह एक छोटे से मनुष्य पर कैसे चढ़ सकते हैं।

उदाहरण:- दो नवयुवक एक बलिष्ट शरीर बालक और दूसरा मरियल सा कमजोर शरीर वाले ज्योषी के पास जाकर पूछने लगे महाराज हम पर कौन से ग्रह चढ़े है जो हमारे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होते। ज्योतिषी ने बलिष्ठ शरीर वाले युवक से कहा कि तुम पर सूर्य ग्रह चढ़े हैं तुम्हारा यह अनिष्ट करेंगे, जल्दी पूजा पाठ दान करो हम सूर्य ग्रह को शान्त कर देंगे।

यह सब कोतुहल एक विद्वान् युवक देख रहा था, उससे रहा नहीं गया वह चुप भी कैसे रह सकता था ऋषि दयानन्द का भक्त जो था। उसने ज्योतिषी से कहा मैं अभी इन दोनों की परीक्षा ले सकता हूँ क्या। ज्योतिषी जी ने अहंकार में कहा अवश्य हमारा कथन कभी गलत नहीं होता है। अस्तु जून का महीना था दोपहर का समय था, विद्वान् युवक ने दोनों पीड़ित युवकों से कहा मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा दोनों के कपड़े उतरवाये और नंगे पैर दोनों पक्के फर्श पर खड़ा कर दिया और आधा घन्टा खड़े रहने को कहा। किन्तु यह क्या जो बलिष्ट शरीर वाला युवक था जिस पर सूर्य ग्रह मेहरबान था वह चक्कर खाकर गिर गया और कमजोर शरीर वाला किन्तु दृढ़ इच्छा वाला वह युवक जिस पर सूर्य ग्रह कुपित थे ज्यों का त्यों खड़ा रहा अब आर्य युवक ज्योतिषी से कहने लगा कहिए महाराज प्रत्यक्ष में आपकी भविष्यवाणी असफल क्यों हुई हैं। वास्तव में सूर्य ग्रह जड़ है और ताप से अधिक कुछ नहीं दे सकता है। गरमी का प्रभाव दोनों पर बराबर पड़ा किन्तु सहन क्षमता मे दोनों अलग-अलग थे। इसलिए नव ग्रहों का ज्योतिष भ्रम है, धोखा है।

शनिग्रह:- शनि ग्रह पृथ्वी से लाखों मील दूर है और कई लाख गुना बड़ा है-बताइए ज्योतिषी महाराज वह शनि ग्रह एक छोटे से आदमी पर कैसे लग सकता है, शनि ग्रह के लगने से तो सारी पृथ्वी ही दब जायेगी। वास्तव में ईश्वरीय व्यवस्था में प्रत्येक ग्रह जड़ है और अपनी-अपनी धुरी पर केन्द्रित है। इस सृष्टि क्रम की व्यवस्था को बनाए रखते हैं। यह मानव जगत का उपकार ही करते हैं किन्तु अपकार कभी नहीं करते हैं।

उदाहरण:-आश्चर्य होता है शनिवार को कुछ लोगों का धंधा खूब चलता है वह एक बाल्टी में तेल लेकर जगह-जगह चौराहों पर घरों में शनि के नाम से लोगों को ढ़गते रहते हैं और अन्धविश्वासी लोग उनकी बाल्टी को सिक्कों से भर देते हैं। क्या शनिदेव मांगने वाले लोगों पर मेहरबान होते हैं। नहीं यह उनका धन हरण का मार्ग है और अधिक आश्चर्य होता है अब शनि को देवता बनाकर उनकी मूर्ति भी बना दी गई है और मन्दिर भी बना दिया गया है। ईश्वर भारत वासियों को सुमति दें।

परिवारों के प्रत्येक शुभ कार्यों में शुभ दिन मुहूर्त निकालना भी भ्रम है:- वास्तव में पृथ्वी पर सब दिन बराबर होते हैं ऋतुओं के अनुसार व जलवायु के अनुसार अपना प्रभाव दिखाते हैं। वैसे प्रत्येक शुभ कार्य करने के लिए प्रत्येक दिन शुभ होता है किन्तु आप अपना शुभ कार्य तब करें जब ऋतु अनुकूल हो स्वास्थ्य अनुकूल हो परिवार सुख शान्ति में हो वह दिन किसी भी समय शुभ कार्य के लिए शुभ होता है।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
73. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
74. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
76. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
77. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

दयानन्द का दीवाना पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

-स्व. आचार्य भगवान देव

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुलतान में हुआ था। आपके पिता का नाम रामकृष्ण था। लाला रामकृष्ण फारसी के बड़े आलिम थे। आपका बचपन का नाम मूला था। 12 वर्ष की उम्र में पण्डित जी अपने पिता के साथ हरिद्वार गए। वहां स्वामी राधे श्याम ने उनका नाम गुरुदत्त रख दिया। आगे चलकर आप गुरुदत्त बने।

गुरुदत्त के पिता स्कूल मास्टर थे। उन्होंने अपने पुत्र को शिक्षा घर में ही दी। 8 वर्ष की उम्र में आप स्कूल में भर्ती हुए। आपने मिडिल परीक्षा झंग से और मैट्रिकुलेशन परीक्षा मुलतान से पास की। 1881 में गुरुदत्त का स्कूल जीवन समाप्त हुआ। हिन्दी पढ़ने में आप तेज थे। अध्यापक और इन्सपेक्टर इस होनहार युवक को देखकर आश्चर्यचकित होते थे। पढ़ने के साथ शारीरिक व्यायाम का कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु गुरुदत्त जी को विद्यार्थी अवस्था में कसरत का खूब शौक था। धार्मिक जीवन की ओर गुरुदत्त जी की बचपन से ही प्रवृत्ति थी। योग की धुन में हरेक साधु की सेवा करते थे।

मुलतान में एण्ट्रेन्स की परीक्षा की तैयारी के समय गुरुदत्त के हृदय में वेद पढ़ने की धुन पैदा हुई और 20 जून 1880 के दिन आप आर्यसमाज के सभासद बने।

सन् 1881 के जनवरी मास में गुरुदत्त जी लाहौर गवर्नमेंट कालिज में भर्ती हुए। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में प्रान्त भर में आपका पांचवां स्थान था।

कॉलिज में जाकर प्रतिभाशील युवक को अपनी कुशाग्रबुद्धि का सिक्का जमाते देर न लगी। कॉलिज का दूसरा वर्ष समाप्त होने से पूर्व आपका दिमाग पश्चिम के दर्शन और विज्ञान की ओर गया। जान स्टुआर्ट मिल में आपको बहुत भक्ति थी, ब्रैडला की युक्तियाँ दिमाग में घुसकर विश्वास की जड़ों को हिलाते रहने का यत्न कर रही थीं। डार्विन और बेन का आपने खूब पाठ किया और बेन्थन के तत्वावधान को पसंद किया। उस समय युरोप का जलवायु हेतुवाद के परमाणुओं से भरपूर हो रहा था। एक ओर से विकासवाद और दूसरी ओर से अनीश्वरवाद के बलवान् आक्रमण विश्वास के किलों की ईंट से ईट बजा रहे थे।

1882 के आरम्भ में गुरुदत्त ने एक की डिबेटिंग क्लब की स्थापना की, जिसमें गम्भीर विषयों पर बहस हुआ करती थी। गुरुदत्त उसके मन्त्री थे। वे प्राय: विवाद में उल्टा पक्ष लिया करते थे। कोई धार्मिक या सामाजिक विषय विवाद की सीमा से नहीं छूट सकता था।

पं. गुरुदत्त जी ने अपने दो अन्य मित्रों के साथ मिलकर 'दी रीजनरेटर ऑफ आर्यावर्त, नाम के अखबार का प्रकाशन किया।

1883 के अक्तूबर मास में स्वामी दयानन्द की भयानक बीमारी का संवाद देश भर में फैल गया। भक्तों के हृदय कांप उठे। समाचार फैल गया कि किसी ने जहर देकर ग्रहण लगाने की चेष्टा की है स्वामी जी उस समय अधिक रोगी होकर अजमेर में आ गए थे। लाहौर की आर्यसमाज की ओर से दो प्रतिनिधि, स्वामी जी को देखने और सेवा करने के लिए रवाना करने का निश्चय हुआ। एक लाला जीवनदास जी चुने गए दूसरा चुनाव गुरुदत्त जी का हुआ।

गुरुदत्त जी ने उसे देखा। देखा तो बहुतों ने, परन्तु जैसा उस जिज्ञासु युवक ने देखा वैसा शायद किसी की दृष्टि में भी न आया। जिज्ञासु ने उस मृत्यु में ब्रह्मचर्य के बल को, योग की महिमा और ईश्वर विश्वास के गौरव को देखा। उसने देखा कि जिसे लोग वियोग कहते हैं वह एक विश्वासी आत्मा के लिए योग है। जिसे साधारण पुरुष सबसे बड़ा दुख कहते हैं, उसे एक योगी प्रियप्राप्ति का आनन्द समझता है। उसने उस ब्रह्मचारी को मृत्यु के समय आदित्य से अधिक तेजस्वी, पर्वत से अधिक मजबूत और प्रभात से अधिक आनन्दित देखा। पंडित गुरुदत्त एक जिज्ञासु आत्मा बनकर लाहौर से चले थे और सच्चे विश्वासी बन अजमेर से लौटे।

उसी वर्ष गुरुदत्त ने 1883 के आरम्भ में एम.ए. की परीक्षा देने वालों में सबसे अधिक नम्बर पाए। पंजाब यूनिवर्सिटी के इतिहास में उस समय यह अपनी

तरह की पहली और अपूर्व घटना समझी गई। गुरुदत्त की धाक प्रांत भर में बैठ गई।

अजमेर से दृढ़ आस्तिक बनकर गुरुदत्तजी जब लाहौर में आए तो आर्य पुरुषों में स्वामी की यादगार को स्थापित करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। डी.ए.वी. कॉलिज की स्थापना का निर्णय लिया गया। गुरुदत्तजी ने कॉलिज को अपनी सेवाएं दी।

किसी एक धुन के सिवा मनुष्य कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। धुन भी इतनी कि दुनिया उसे पागल कहे। उसे योग और वेद की धुन थी। अब गुरुदत्त जी स्कूल में पढ़ते थे, तभी से उन्हें शौक था योगी होने का। प्राणायाम का अभ्यास आपने बचपन से ही आरम्भ कर दिया था। अजमेर में योगी की मृत्यु को देखकर योग सीखने की इच्छा और भी अधिक भड़क उठी। लाहौर पहुंचकर आपने योग दर्शन का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया।

गुरुदत्त को दूसरी धुन थी, वेदों का अर्थ समझने की। वेदों पर आपकी असीम श्रद्धा थी। वेदाभ्यास का आप निरन्तर अनुशीलन करते थे। जब अर्थ समझने में कठिनता प्रतीत होने लगी तब अष्टाध्यायी और निरूक्त का अध्ययन आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे अष्टाध्यायी का स्वाध्याय आपके लिए सबसे प्रथम कर्त्तव्य बन गया। क्योंकि आप उसे वेद तक पहुंचने का द्वार समझते थे। आपका शोक उस नौजवान समूह में भी प्रतिबिम्बित होने लगा, जो आपके पास रहा करता था। अष्टाध्यायी, निरूक्त और वेद स्वाध्याय निरंतर चलता रहा। डी.ए.वी. कॉलेज की शिक्षा से असन्तुष्ट होकर कुछ लोगों ने एक दूसरी संस्था चलाने का निश्चय किया।

बहुत से आर्यपुरुषों को डी.ए.वी. कॉलिज में आर्यग्रन्थों की पढ़ाई न होने की शिकायत थी।

जुलाई 1889 में गुरुदत्त ने 'वैदिक मैगजीन' नाम का मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया। इससे पूर्व वे आर्यपत्रिका में प्रायः लिखते रहते थे। अंग्रेजी के विद्वानों में आपके लेख पसन्द किए जाते थे। युरोप के संस्कृतज्ञ वैदिक साहित्य के विषय में जो असम्बन्ध या प्रमाणरहित लेख लिखते थे, पण्डितजी उनका प्रतिवाद निकालते रहते थे। मैगजीन ने तो आपकी धाक ही बांध दी। वैदिक मैगजीन एक मासिक पत्रिका थी, परन्तु पाठक उसकी आजकल के मासिक पत्रों से उसकी तुलना न करें। वह एक प्रतिभासम्पन्न विचारक के मास भर के दिमागी व्यायाम का परिणाम होता था। वेदमन्त्रों की उपनिषदों की और अन्य आर्यग्रन्थों की व्याख्या होती थी और वैदिक सिद्धान्तों पर योग्यतापूर्ण लेख होते थे। जिन दिनों वैदिक मैगजीन लिखी जाती थी, उन दिनों पण्डित जी कोई समाचार पत्र नहीं पढ़ते थे। रात-दिन स्वाध्याय और विचार में लगे रहते थे। स्वाध्याय के सिवा बस दो ही काम थे। कभी-कभी बाहर उत्सवों पर व्याख्यान के लिए जाना पड़ता था और लाहौर शंका-समाधान के लिए भी समय देना पड़ता था।

जो बरसात समय से पहले आ जाती है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। गुरुदत्त जी में प्रतिभा समय से पूर्व ही बरस पड़ी थी। 19 वर्ष की अवस्था का विद्यार्थी पंजाब की आर्यसमाज का प्रतिनिधि बनाकर अजमेर भेजा गया था। 24वां वर्ष की अवस्था में एम.ए. को गर्वनमेंट कॉलिज में साइन्स का बड़ा अध्यापक नियुक्त कर दिया जाता है। कार्य की धुन में शरीर की चिन्ता छोड़ दी। जिस काम में लगे, उसके सिवा सब कुछ भुला दिया।

जवानी में आपका शरीर अच्छा मजबूत था। ईश्वरीय नियमों के उल्लंघन ने उसे शिथिल कर दिया। वैदिक धर्म की धुन ने इस दुनिया को तोड़ डाला। प्रतीत होता है कि गुरु के बिना प्राणायाम के परिश्रम ने भी शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव उत्पन्न किया। प्रचार के लिए कई वर्षों तक आपको निरन्तर दौरा लगाना पड़ा। इन सब कारणों से आर्यसमाज की आशाओं के केन्द्र उस होनहार नवयुवक को क्षय रोग ने आ घेरा। 1889 के मध्य से भक्तों और मित्रों को मालूम हुआ कि आप बीमार हैं। डाक्टरी, यूनानी और आयुर्वेदिक सभी तरह के इलाज किए गए, परन्तु रोग बढ़ता ही गया। जब अन्त समय आया, तब आप ने अन्तिम हवन करवाया और स्वयं वेदमन्त्रों का उच्चारण किया। 19 मार्च 1989 ई. को प्रातः 7 बजे ईश्वर का स्मरण करते हुए बड़ी शान्ति के साथ प्राणों का परित्याग किया। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी 26 वर्ष की अल्प आयु में इस लोक से प्रयाण कर चिर निद्रा में लीन हो गये।

अमर शहीद सरदार भगत सिंह

सरदार भगतसिंह का नाम अमर शहीदों में सबसे प्रमुख रूप से लिया जाता है। भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गांव (जो अभी पाकिस्तान में है) के एक देशभक्त सिख परिवार में हुआ था, जिसका अनुकूल प्रभाव उन पर पड़ा था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था।

यह एक सिख परिवार था जिसने आर्य समाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। भगत सिंह के जन्म के समय उनके पिता 'सरदार किशन सिंह' एवं उनके दो चाचा 'अजीतसिंह' तथा 'स्वर्णसिंह' अंग्रेजों के खिलाफ होने के कारण जेल में बंद थे। जिस दिन भगतसिंह पैदा हुए उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया। इस शुभ घड़ी के अवसर पर भगतसिंह के घर में खुशी और भी बढ़ गई थी।

भगतसिंह के जन्म के बाद उनकी दादी ने उनका नाम 'भागो वाला' रखा था। जिसका मतलब होता है 'अच्छे भाग्य वाला'। बाद में उन्हें 'भगतसिंह' कहा जाने लगा। वह 14 वर्ष की आयु से ही पंजाब की क्रांतिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे। डी.ए.वी. स्कूल से उन्होंने नौवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1923 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें विवाह बंधन में बांधने की तैयारियां होने लगी तो वह लाहौर से भागकर कानपुर आ गए। फिर देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें कि पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया। भगतसिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह युवकों के लिए हमेशा ही एक बहुत बड़ा आदर्श बना रहेगा। भगतसिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अंदाजा लगता है। उन्होंने भारतीय समाज में भाषा,जाति और धर्म के कारण आई दूरियों पर दुःख व्यक्त किया था।

उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग पर किसी भारतीय के प्रहार को भी उसी सख्ती से सोचा जितना कि किसी अंग्रेज के द्वारा किए गए अत्याचार को। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उग्र हो जाएगी, लेकिन जबतक वह जिंदा रहेंगे ऐसा नहीं हो पाएगा। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था।

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगतसिंह की सोच पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगतसिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की। काकोरी कांड में रामप्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजा से भगतसिंह इतने ज्यादा बेचैन हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया' हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था। इसके बाद भगतसिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

को मारा। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने भी उनकी पूरी सहायता की। इसके बाद भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर अलीपुर रोड़ दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेम्बली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके। बम फेंकने के बाद वहीं पर उन दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी। इसके बाद 'लाहौर षडयंत्र' के इस मुकदमें में भगतसिंह को और उनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव को 23 मार्च, 1931 को एक साथ फांसी पर लटका दिया गया। यह माना जाता है कि मृत्युदंड के लिए 24 मार्च की सुबह ही तय थी, लेकिन लोगों के भय से डरी सरकार ने 23-24 मार्च की मध्यरात्रि ही इन वीरों की जीवनलीला समाप्त कर दी और रात के अंधेरे में ही सतलुज के किनारे उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया। यह एक संयोग ही था कि जब उन्हें फांसी दी गई और उन्होंने संसार से विदा ली, उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 5 माह और 23 दिन थी और दिन भी था 23 मार्च। अपने फांसी से पहले भगत सिंह ने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा था, जिसमें कहा था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्ध बंदी समझा जाए तथा फांसी देने के बजाए गोली से उड़ा दिया जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

भगतसिंह की शहादत से न केवल अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को गति मिली बल्कि नवयुवकों के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत बन गए। वह देश के समस्त शहीदों के सिरमौर बन गए। उनके जीवन पर आधारित कई हिन्दी फिल्में भी बनी हैं जिनमें-द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, शहीद, शहीद भगत सिंह आदि। आज भी सारा देश उनके बलिदान को बड़ी गंभीरता व सम्मान से याद करता है। भारत और पाकिस्तान की जनता उन्हें आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

शास्त्रार्थ महारथी पं. राम चन्द्र देहलवी जी का हाजिर जवाबी

– कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

पं. रामचन्द्र देहलवी जी का जीवन सदैव आर्थिक तंगी में रहा। एक बार तो उनके घर में एक समय ऐसा भी आया कि किसी थानेदार ने ईर्ष्यावश उनके घर में चोरी करवा दी और उन्हें सब्जी के पैसे जुटाने के लिए घर में रखी रद्दी बेचनी पड़ी, तब कहीं खाना बना। एक समय ऐसा भी आया जब वे दो समय भरपेट भोजन भी न कर पाते थे परन्तु इन सब कठिनाईयों के होते हुए वह जब भी धर्म प्रचार के लिए जाते थे तो किराया अपनी जेब से व्यय करते थे।

पं. जी अपने इस कंटकमय पारिवारिक जीवन से कभी भी दु:खी नहीं हुए। अपनी अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी वे धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहे।

दिल्ली के फव्वारा चौक पर सप्ताह में दो दिन मुसलमान व्याख्यान देते थे, दो दिन ईसाई व्याख्यान देते थे उन व्याख्यानों में वे हिन्दू धर्म पर बे. सिर पैर के घातक हमले करते थे।'' इस विचार ने उन्हें बेचैन कर दिया उन्होंने अपने मन में विचार किया, ''अरे! तेरे स्वाध्याय का क्या लाभ? यह तो व्यर्थ जा रहा है।'' इस विचार से दु:खी होकर उन्होंने पुलिस को सूचना दी कि सप्ताह के शेष दो दिनों में मैं आर्य जाति पर होने वाले अपेक्षों का उत्तर दूँगा। अगले ही दिन से उन्होंने फव्वारा चौक दिल्ली पर अपना पहला व्याख्यान दिया। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती गई और उन दोनों मुसलमान तथा ईसाईयों की महफिल उजड़ती गई। अन्ततः वे दोनों वहाँ से भाग निकले तथा पं. जी के व्याख्यानों में भीड़ इतनी बढ़ गई कि चाँदनी चौक का आवागमन ठप्प होने लगा तभी पुलिस ने इनको व्याख्यानों के लिए पुरानी देहली रेलवे स्टेशन के सामने गांधी ग्राऊन्ड में स्थान दे दिया। इन व्याख्यानों का कार्यक्रम सप्ताह के 6 दिनों तक फव्वारा चौक व गांधी ग्राउन्ड में पूरे 15 वर्ष (1910 से 1925 तक) नियमित चलता रहा। विशेषता यह रही कि इन 15 वर्षों में व्याख्यानों के क्रम में एक दिन भी अनुपस्थित नहीं हुए जब कि उनके पुत्र व उनकी कर्त्तव्य पारायण धर्मपत्नी की मृत्यु भी व्याख्यान के दिनों में हुई थी।

कन्हैया लाल आर्य

हाजिर जवाबी:- इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली तुरन्त बुद्धि व अनुपम कार्य प्रणाली का बोल-बाला सारे भारत में हो गया। आपने शास्त्रार्थों से विरोधियों को पूरी तरह पराजित किया। उनके शास्त्रार्थों एवं धर्म चर्चाओं में हाजिर जवाबी एवं व्यंग्य विनोद की भरमार रहती थी।

बाड़ा हिन्दू राव में पं. जी का पहला शास्त्रार्थ मौलाना से हुआ वह बहुत ही सफ़ल रहा। कुरआन के गुरु हाफिज साहब ने छिप कर सुना था तब उनकी बांछें खिल गई थी। वे कुरान की आयतों को इतना शुद्ध सुनकर, अत्याधिक प्रसन्न हुए थे। इस सफलता से उनका आत्मविश्वास दृढ़ से दृढ़तर हो गया। जनता को धर्म के क्षेत्र में पण्डित रामचन्द्र देहलवी जी के रूप में भीम मिल गया जिसके पास अकाट्स तर्कों की गदा थी जिससे वे प्रतिद्वन्द्वी पहलवान को पछाड़ने में सिद्धहस्त थे। न जाने कितने अखाड़े जमे जिनमें पण्डित जी ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को चारों खाने चित किया। इन अखाड़ों में उनकी हाजिर जवाबी के कुछ दृश्य देखिये:-

1. एक शास्त्रार्थ में मौलाना सनाउल्ला ने कहा, ''पण्डित जी! जहाँ आपके 'राम' समाप्त होते हैं वहीं हमारे मुहम्मद साहब शुरु होते हैं। अतः अब आपको राम का नाम छोड़कर मुहम्मद का जप करना चाहिए। देहलवी जी बोले, ''शाबाश मौलाना साहब! बहुत सुन्दर! परन्तु मौलाना साहब। बीच में क्यों रूक गये। आगे भी कहो।'' मौलाना बोले, ''आगे क्या है? यह आप ही कह दीजिए।'' पण्डित जी बोले, ''मौलाना साहब! जहां आपके मुहम्मद साहब समाप्त होते हैं वहाँ से दयानन्द शुरु हो जाते हैं। इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़कर दयानन्द के गीत गाओ'' मौलाना ने पूछा, ''दयानन्द समाप्त कहाँ होते हैं?'' पण्डित जी बोले, ''दयानन्द जहाँ से प्रारम्भ होता है, वहाँ ही समाप्त होता है'' अर्थात् 'द' से प्रारम्भ होकर 'द' पर समाप्त

होता है। इस सटीक उत्तर को सुनकर मौलाना की बोलती बन्द हो गई।

एक बार की बात है कि मौलाना सनाउल्ला के मन में शरारत आ गई। उन्होंने पण्डित जी से कहा, ''पण्डित जी! मैं आपके गुरु स्वामी दयानन्द की मुख्य पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पर लघुशंका करना चाहता हूँ।'' पण्डित जी मौलाना की शरारत को भाँप गये। उसे उसी की भाषा में उत्तर देना आवश्यक था। पण्डित जी ने तुरन्त उत्तर दिया, ''मौलाना! तुम्हें अपने मुँह से लघुशंका करने की बीमारी कब से हो गई? इसे थोड़ी देर मुँह में रखिये।'' लघुशंका के दो अर्थ है छोटी शंका करना तथा मूत्र करना। मौलाना का उद्देश्य ऋषि दयानन्द जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पर मूत्र करना था। उसकी इस शरारत पूर्ण उक्ति का उसी, भाषा में उत्तर देते हुए कहा ''मौलाना अभी मुँह में रखिये' अर्थात् कुछ देर पश्चात् शंका करना। इससे मौलाना निरूतर हो गया।

पण्डित जी आर्य समाज फिरोजपुर पंजाब के वार्षिकोत्सव में भाग लेने गये वहाँ भी शास्त्रार्थ का अखाड़ा जमा। शास्त्रार्थ को सुनने वालों में एक पठान नवयुवती भी थी जो अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। पण्डित जी कुरान शरीफ की आयतें ऐसी शुद्ध ढंग से पढ़ते थे कि बड़े-बड़े हाफिज व मौलवी भी चकित रह जाते थे। यह पठान लड़की भी पण्डित जी की वाणी से अत्यन्त प्रभावित हुई। उसे पण्डित जी का आयतें पढ़ना बहुत अच्छा लगा और उसने वहाँ के मन्त्री को दस रूपये का नोट दिया और कहा ''साडे मौलवी पण्डित नू ए दस रूपये मेरे बल्लों देई''। पण्डित जी हँसते-हँसते यह घटना सुनाने के पश्चात् कहा करते थे, ''मुझे अरबी पढ़ने की फीस भी मुस्लिम मतावलम्बी ने ही दी। मैंने अपनी जेब से कुछ व्यय नहीं किया।'' स्मरण रहे पण्डित जी ने जिस हाफिज से कुरान शरीफ पढ़ा था उसको उसने 10 रूपये शुल्क ही दिया था। इस प्रकार कुरान पढ़ने का शुल्क एक मुस्लिम महिला के द्वारा दिये जाने पर पण्डित जी ने यह बात कही।

एक बार की बात है कि आयत पढ़ने में कही जबर व जेर (बड़ा 'ऊ' ऊपर छोटी ई नीचे) के ऊपर विवाद खड़ा हो गया। पण्डित जी ने विवाद की समाप्ति के लिए कुरान शरीफ की जो प्रति उनके पास थी खोलकर दिखा दी। मौलाना ने अपनी भूल स्वीकार की और अपने कान भरी सभा में पकड़े। लोगों ने सभा में शोर मचा दिया और कहा, ''पण्डित जी ने मौलाना के कान पकड़वा दिये।''

बात दीनानगर की है। एक बार मौलवी अल्लाह दिता पण्डित जी के साथ ईश्वर की आराधना पर चर्चा कर रहे थे। पण्डित जी ने पूछा, ''मौलबी जी'' यह बताईय कि जब आप नमाज पढ़ते समय खड़े होते हैं, जब आप रूकू (घुटनों पर हाथ रख कर झुकते हैं) करते हैं और जब आप सिजदा (नमस्कार) करते हैं तो अपनी पेशानी (माथे) को भूमि पर रख देते हैं, तो इस सबसे आप का क्या अर्थ?'' मौलवी जी ने कहा, ''पण्डित जी, हम खुदा का सम्मान करते हैं'' पण्डित जी ने पूछा'' क्या इस सम्मान से खुदा पर कोई प्रभाव पड़ता है?'' मौलवी साहब ने उत्तर दिया, ''खुदा इस सम्मान से प्रसन्न होता है।'' पण्डित जी ने कहा, ''अब सम्मान प्रकट करके खुदा में परिवर्तन उत्पन्न करना चाहते हैं। पहले वह प्रसन्न नहीं होता, बाद में प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार उस समय प्रत्येक क्षण कोई न कोई नमाज पढ़ ही रहा होता है तो आप का खुदा प्रत्येक क्षण परिवर्तित हो रहा होता है। क्या ऐसा खुदा-खुदा हो सकता है?'' मौलवी जी थोड़े होश में आये और कहने लगे, ''पण्डित जी, खुदा पर उसका कोई प्रभाव नहीं होगा, इसका प्रभाव हम पर ही होता है।'' पण्डित जी ने कहा, ''आप सम्भल गये नहीं तो आप का खुदा खुदा न रह कर कुछ और हो होता, प्रत्येकक्षण परिवर्तित हो जाने के कारण न जाने क्या बन जाता। स्मरण रखिये खुदा पर सम्मान दिखलाने का कोई प्रभाव नहीं होता।

हमारे पौराणिक भाई कई बार ऐसा कहते हैं कि हम परमात्मा की सेवा (पूजा) करते हैं। अब विचारते है कि भगवान् की सेवा के लिए क्या चाहिए। सेवा के लिए चार वस्तुएँ चाहिए। 1. सेवक (सेवा करने वाला) 2. सेव्य (जिसकी सेवा की जाये), 3. सेवा (जो क्रिया सेवा के लिए करता है) 4. सेवा का सामान। ये चार वस्तुएँ होनी आवश्यक है।

भगवान् की पूजा करने से पूर्व हमें यह ज्ञान प्राप्त करना होगा कि उसको सेवा कैसे की जाये। भगवान् के लिए हम कौनसी ऐसी वस्तु लाये जिसकी उसे आवश्यकता है। जब हमें उसकी आवश्यकता का ज्ञान हो जायेगा तब ही हम उसकी सेवा कर सकेंगे। अन्यथा नहीं। पण्डित जी ने एक वार्षिकोत्सव पर प्रवचन करते हुए इस विषय पर वार्ता प्रारम्भ की, ''मैं जब यहां आया तो लोगों ने मुझसे पूछा, '' क्या आप चाय पीते हैं? मैंने कहा, ''बिल्कुल नहीं। मैं चाय नहीं पीता हूँ। अत: चाय मेरी आवयकता में नहीं है। क्या मेरी सेवा चाय द्वारा हो सकती है। स्पष्ट उत्तर होगा नहीं हो सकती। यदि कोई चाय लाता है तो उसका लाना व्यर्थ होगा क्योंकि कि चाय मेरी आवश्यकता में नहीं है। यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करना चाहेगा तो पहले मेरी आवश्यकता की वस्तुओं का पता करेगा।

पण्डित जी ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, ''मैं अम्बाला में वर्मा जी के यहाँ ठहरा हुआ था। उनके यहाँ एक और सज्जन भी ठहरे हुए थे। वे चाय पीते थे। नौकर को कुछ शीघ्रता थी उसने चाय उस समय बना दी, जब वह सज्जन शौच जाने के लिए तैयार हो रहे थे। उन्होंने पूछा, ''क्या लाये हो?'' नौकर ने उत्तर दिया है, ''चाय लाया हूँ, क्योंकि आप चाय पीते हैं'' उन्होंने नौकर से कहा, ''श्रीमान जी, यह ठीक है कि मैं चाय पीता हूँ परन्तु मैं इस समय शौच के लिए जा रहा हूँ अत: इस समय मुझे चाय की आवश्यकता नहीं है।'' इससे ज्ञात हुआ कि आवश्यकता की वस्तु भी उचित अवसर पर ही उचित लगती है।

तो आप और मुझे भगवान् की आवश्यकताओं को जानना होगा जिससे हम उसकी सेवा कर सकें। आज तक कोई व्यक्ति ऐसा नहीं मिला है जो यह पता कर सके कि ईश्वर की क्या आवश्यकता है। पानी, वायु, जीवन बनाये रखने की सामग्री संसार की प्रत्येक वस्तु वह हमें देता है, जिसका भंडार अपूर्व है, वह हमसे क्या चाहेगा? पूजा करने वालों ने जब यह बात समझली कि ईश्वर की सेवा कुछ देकर नहीं की जा सकती तो कुछ तथा कथित पण्डितों ने अपने पेट पूजा के लिए यह पाखण्डी मार्ग अपना लिए और प्रत्येक व्यक्ति, संस्था ने अपने अपने ईश्वर बना लिए। किसी ने मिट्टी के, चाँदी के, सोने के तथा अन्य सामग्री के थे तथा कथित भगवान स्वयं तो खाते नहीं, पीते नहीं, पहनते नहीं परन्तु पाखण्डी पण्डितों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इस प्रकार की सेवाओं का प्रावधान करके अपनी पेट पूजा का साधन बना लिया है।

एक बार की बात है कि पण्डित रामचन्द्र देहलवी जी शास्त्रार्थ करने सहारनपुर जा रहे थे। रास्ते में ट्रेन देवबन्द स्टेशन पर आकर रूकी। मुसलमानों ने अपने एक मौलवी को तैयार कर ट्रेन में चढ़ा दिया। अकस्मात् पण्डित जी ने उसके पहनावे से अनुमान लगा लिया कि ये हो न हो ये किसी कार्यक्रम में जा रहे है। पण्डित जी ने उस मौलवी जी से पूछा, मौलवी जी! आप कहाँ जा रहे है''' मौलवी ने उत्तर दिया, ''सहारनपुर एक देहलवी नाम के व्यक्ति से शास्त्रार्थ करने जा रहा हूँ'' पण्डित ने उस मौलवी से पूछा, ''शास्त्रार्थ किस दिन का है?'' मौलवी जी ने उत्तर दिया, ''शनिवार के दिन''। पण्डित जी ने पूछा, ''मौलवी जी! आज कौन सा दिन है?'' मौलवी ने उत्तर दिया, ''आज जुमेरात है।'' पण्डित जी बोले, ''मैंने दिन पूछा है, आप रात बता रहे है।'' मौलाना पण्डित जी की वार्ता एवं पहरावे से अनुमान लगा लिया और समझ गये कि सम्भवत: इन्हीं के साथ शास्त्रार्थ होना हैं, अत: अगले स्टेशन पर उतरकर नौ दो ग्यारह हो गये।

इस प्रकार वे मुसलमानों, इसाइयों एवं पौराणिकों को प्रत्येक प्रश्न का सहज उत्तर दे दिया करते थे। वे अंग्रेजी, हिन्दी संस्कृत के साथ-साथ अरबी व फारसी के पूर्ण विद्वान् थे। जिन सज्जनों ने उनके व्याख्यान व शास्त्रार्थ सुने थे, वे उनसे बहुत प्रभावित होते थे। आज उनके स्मृति दिवस पर हम उनको शत-शत नमन करते हैं।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **–विक्रमदेव शास्त्री**

मर्यादाओं के संस्थापक श्रीराम

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

मर्यादा परिधि या सीमा को कहते हैं, जैसे किसी देश, राज्य, क्षेत्र या ग्राम की सीमा होती है। जब एक देश का नागरिक भूलवश दूसरे देश की सीमा में पहुँच जाए तो वहाँ के सैनिक उसे दोषी मान कारागृह में डाल देते हैं। किसी के घर या क्षेत्र का अतिक्रमण किये जाने पर वह उसका पतिरोध करता है। समझदारी यह है कि सभी अपनी सीमा में रहें। जैसे लोकव्यवहार में हम सीमाबद्ध होकर अपने कार्यों को करते हैं वैसे ही परमात्मा ने वेदवाणी के द्वारा मनुष्यों को व्रत-नियमों का पालन करते हुए मर्यादित जीवनचक्र चलाने का निर्देश दिया है-

मा पृणन्तो दुरितमेन आरन्मा जारिषु सूरयः सुव्रतासः।
अन्यस्तेषां परिधिरस्तु कश्चिदपृणन्तमभि संयन्तु शोकाः॥

- ऋ 1.125.7

हे मनुष्यो! स्वयं तथा अपनी सन्तान को पुष्ट करते हुए जिन खोटे काम-पापाचरण आदि से दुःख प्राप्त होता है, उसे मत करो। तुम ज्ञान, ब्रह्मचर्य, सत्यभाषणादि से युक्त होकर अव्रती जार कर्म में लिप्तजनों का संग मत करो। तुमको दूर्वत्तों से बचानेवाली कुछ मर्यादाएँ होनी चाहिएँ। वेद में सात मर्यादाओं का वर्णन आया है-

सप्तमर्यादाः वयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरोऽगात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरूणेषु तस्थौ॥

- ऋ. 10.5.6

मनीषी जनों ने सात मर्यादाएँ निर्धारित की हैं। इनमें से यदि एक का भी मनुष्य उल्लंघन करता है तो वह पापी होता है। वह मनुष्य सचमुच प्रगति एवं ज्ञान का स्तम्भ है जो विपत्ति के अवसर और मार्ग-भ्रमित होने पर भी परमेश्वर के आश्रय में स्थित रहता है।

मनुस्मृति के अनुसार यदि एक इन्द्रिय भी मर्यादा को छोड़ विषयों में प्रवृत्त होती है तो उस व्यक्ति की सारी प्रज्ञा या बुद्धि का नाश हो जाता है। जैसे चमड़े के पात्र में छिद्र हो जाने पर उसमें रखा हुआ सारा जल बह जाता है। इसलिए बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि वह मन और इन्द्रियों को योगाभ्यास द्वारा वश में कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का प्रयत्न करे। विकार अर्थात् पतन का अवसर उपस्थित होने पर भी जिनका चित्त कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं होता वे ही शूरवीर और जितेन्द्रिय कहलाने के अधिकारी हैं। महर्षि यास्क ने निरूक्त में सात मर्यादाओं के नाम गिनाये हैं। तद्यथा-चोरी करना, परस्त्रीगमन, ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या (गर्भपात), मद्यपान, किसी बुरे काम को जानबूझकर बार-बार करना और पाप को छिपाने के लिए झूठ बोलना। कुछों के मत में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान ये सात मर्यादाएँ हैं। इन दोनों का उद्देश्य लगभग समान है। जहाँ चोरी आदि का कथन हो वहाँ दूर रहना समझना चाहिए और अहिंसा, सत्यादि का पालन या धारण करना भी मर्यादा का अभिप्राय है।

इन मर्यादाओं का पूर्णतः पालन वही कर सकता है जो परमेश्वर को अपने जीवन का आधार मानकर चलता हो। यही बात मनु ने योगाभ्यास पर बल देते हुए कही है। दोनों का उद्देश्य एक ही है। वेद इसे और स्पष्ट करता है-

अनड्वाहं प्लवमन्वारधध्वं सनो निरवक्षद् दुरितादवद्यात्।
आरोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरूर्वीभिरमतिं तरेम्॥

- अथर्व. 12.2.48

हे मनुष्यो! जीवन को सन्मार्ग पर ले जानेवाले परमेश्वर का निरन्तर सहारा लो। वह तुमको निन्दा, अपयश और सभी प्रकार के कष्टों से बचाएगा। सारे जगत् को चलानेवाले माँझी की इस नाव पर चढ़ो कि जिससे छहों दिशाओं से आनेवाली विपत्तियों से बचते हुए भवसागर को पार किया जा सके। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और छठा मन ही छह दिशाएँ हैं, जिनसे अमति और दुर्बुद्धि जल जीवन-नौका में प्रवेश कर उसे डुबो देते हैं। इन विपत्तियों से बचने के लिए शक्ति के अनन्य स्रोत परमेश्वर का आश्रय लेना ही एकमात्र उपाय है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम-इक्ष्वाकु कुलभूषण, दशरथनन्दन, प्रजावत्सल श्रीरामचन्द्रजी का जीवन एक ऐसा आदर्श है जिसमें वे पहले कही गई सभी मर्यादाओं का पालन करते हुए दिखलाई देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वेदों की शिक्षा को उन्होंने अपने जीवन में क्रियात्मक रूप से धारण किया हो। इन्हीं गुणों के कारण स्वयं महर्षि

वाल्मीकि ने अशोक वाटिका में सीता की खोज में निकले हनुमानजी द्वारा श्रीराम को मर्यादाओं का स्थापक कहलवाया है। हनुमान्‌जी श्रीराम के गुणों का वर्णन करते हुए सीता से कहते हैं।

रामो भामिनी लोकस्य चातुर्वर्ण्यस्य रक्षिता।
मर्यादानां च लोकस्य कर्त्ता कारयिता च सः॥

– वा.रा.सु. 35.11

हे सीते! श्रीरामचन्द्रजी चारों वर्णों के रक्षक, लोक में धर्म की मर्यादाओं को बाँधकर उनका पालन करने और करानेवाले वे स्वयं ही हैं। परम तेजस्वी होने से सर्वत्र आदर सत्कार को प्राप्त करते हैं। वे ब्रह्मचर्यव्रत में स्थित हैं, साधुजनों का उपकार मानते हैं, अपने आचरण से सत्कर्मों के प्रचार का ढंग जानते हैं और सत्यधर्म के अनुष्ठान में संलग्न, न्यायसंगत धन का संग्रह, प्रजा का अनुग्रह करने में तत्पर एवं सब लोगों को प्रियवचन बोलने वाले हैं।

शाकाहारी श्रीराम-

न मांसं राघवो भुङ्क्ते न चैव मधु सेवते।
वन्यं सुविहितं नित्यं भक्तमश्नाति पञ्चमम्॥

– वा.रा.सु. 36.41

हे विदेहनन्दिनि! श्रीराम न तो मांस खाते हैं और न ही मद्यपान करते हैं। वे सदा शास्त्रविहित जंगली फल, मूल और नीवार आदि धानों का भोजन करते हैं।

सत्यप्रतिज्ञ राम-'रामो द्विर्नभाषते'।
रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाय पर वचन न जाई॥

रघुवंशियों की यह परम्परा रही है कि वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते हैं। वनवास के समय असुरों का विनाश करने की प्रतिज्ञा करने पर सीता विह्वल होकर कहती है-हे राम! क्या मतिभ्रष्ट मानवों के शोधन का उपाय शस्त्र ही है, साम, दाम नहीं? तब श्रीराम ने उत्तर दिया-

नहीं प्रिये सुधर सकता है मनुष्य तप से भी
त्याग से भी उत्तर दिया था तब राम ने।
किन्तु तप का सदैव चलता नहीं है वश
पतित समूह की कुवृत्तियों के सामने॥

मैंने इन तपस्वी ब्राह्मणों के सामने प्रतिज्ञा की है। सुनो-

अप्यहं जीवितं जह्यां त्वां सीते सलक्ष्मणम्।
न तु प्रतिज्ञां संश्रुत्य ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः॥

– बा.रा.अ. 10.18

मैं प्रतिज्ञा-पालन के लिए तुम्हें, लक्ष्मण एवं निज जीवन का भी परित्याग कर सकता हूँ, परन्तु की हुई प्रतिज्ञा का अतिक्रमण करना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

माता-पिता के भक्त श्रीराम- श्रीराम का जीवन वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत था। वेद में कहा है-**'अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवन्तु संमनाः'**, अर्थात् पुत्र पिता के व्रतों का पालन एवं माता के समान विचारवाला हो। वेद का यह आदेश उनके जीवन में सर्वत्र चरितार्थ होता हुआ दिखाई पड़ता है।

भरत द्वारा अपनी माता केकैयी की निन्दा किये जाने पर भी वे उन्हें यशस्विनी केकैयी कहकर बोलते हैं। भरत को समझाते हैं कि आपके कहने से यदि मैं अयोध्या लौट जाता हूँ तो फिर कौन पिता यह बात गर्व से कह सकेगा कि मेरा पुत्र मेरी आज्ञा का पालन करता है।

धर्म के रक्षक राम-वनवास का समाचार जान लक्ष्मण श्रीराम के निकट आये और कहने लगे-निश्चित ही महाराजा दशरथ की बुद्धि वृद्धावस्था के कारण क्षीण हो गई है। आपके वनगमन के समाचार को जब तक दूसरे लोग जान पाएँ, इससे पहले ही आप अयोध्या का राजसिंहासन अपने अधीन कर लें। मैं धनुष-बाण लेकर खड़ा रहता हूँ। इसी प्रकार लंका में युद्ध करते हुए जब मेघनाद ने कृत्रिम सीता का वध हनुमान एवं दूसरे वानर वीरों के सामने कर दिया तब यह समाचार सुनकर श्रीराम मूर्च्छित हो गये उस समय लक्ष्मण ने कहा-मैं देखता हूँ कि आप-सदृश धर्मात्माजन विविध कष्टों को भोग रहे हैं, उधर अधर्मात्मा रावण सब सुखों से युक्त हो हमें पीड़ित कर रहा है। मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि धर्म के स्थान पर पुरुषार्थ कर धन प्राप्त करना ही सुखों का मूल है। व्यक्ति धन के द्वारा ही धर्म कर पाता है। निर्धन व्यक्ति के सभी मनोरथ निष्फल होते हैं। जो लोग धर्म का आचरण करते हुए तप कर रहे हैं, उन पुरुषों का लोक अर्थाभाव के कारण कष्टमय हो जाता है, यह

स्पष्ट देखा जा सकता है। वही अर्थ इन दुर्दिनों में आपके पास उसी भाँति दिखलाई नहीं दे रहा है जैसे आकाश में बादल घिर आने पर ग्रहों एवं नक्षत्रों के दर्शन नहीं होते। (युद्ध 83.40)

लक्ष्मण के वचन सुनकर श्रीराम ने कहा-लक्ष्मण! धर्म के फलस्वरूप धर्म, अर्थ, काम इन तीनों की प्राप्ति होती है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसे पति के अधीन रहनेवाली भार्या धर्म, अर्थ, काम तीनों की प्राप्ति में सहायक होती है। पञ्चमहायज्ञों के अनुष्ठान द्वारा धर्म में, मनोनुकूल होने से काम में और पुत्रवती होने से अर्थ संग्रह में सहायक होती है वैसे ही धर्म धन और काम में संग्रह में सहायक है। जिस कर्म में धर्म, अर्थ, काम ये तीनों सम्मिलित न भी हों, परन्तु जिससे धर्म बनता हो वही कर्म करना चाहिए। धर्म को छोड़कर केवल अर्थ-संग्रह करने वाले से लोग द्वेष करने लगते हैं। ऐसे ही केवल कामासक्ति लोक में प्रशंसित नहीं होती। (वा.रा. अयोध्या 21.46.47)

उपसहांर-श्रीराम का जीवन-चरित्र जिधर से भी देखें, सभी ओर से मर्यादित दिखलाई देता है। वे समुद्र के समान गंभीर, धीर वीर और प्रजावत्सल हैं। इसीलिए कवि को कहना पड़ा-

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है॥

श्यामजी कृष्ण वर्मा

महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य संस्कृत के प्रकांड पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस व स्विटजरलैंड आदि देशों से संचालित की। इन्होंने इंग्लैण्ड में 1905 में 'होमरूल सोसायटी' व 'इंडिया हाउस' होस्टल की स्थापना की। इंग्लैण्ड में गिरफ्तारी के भय से पेरिस पहुँचे। इंडिया हाउस क्रान्तिकारियों की धारणस्थली बन गया। भारत में रासबिहारी बोस ने 21 फरवरी 1915 को सारे देश से एक साथ अंग्रेज हुकूमत को उखाड़ फेंकने की योजना बना रखी थी। उनकी मदद के लिए इन्होंने मैडम कामा को साथ लेकर जर्मनी से स्टीमरों द्वारा हथियारों का जखीरा व 'बम बनाने की विधि' पुस्तक को गुप्त रूप से भारत भेजा। प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों को उकसाने पर फ्रांस की सरकार ने इन्हें राजद्रोही घोषित कर दिया। अतः श्यामजी वर्मा गुप्त रूप से स्विटजरलैंड चले गये। अंग्रेज सरकार इनसे घबरा उठी। निरंतर संघर्ष करते-करते 73 वर्ष की आयु में भारत माँ का यह सच्चा सपूत इस संसार से सदा के लिए विदा हो गया।
अंतिम समय भी शायद इनकी यही भावना रही होगी:

''भारत न रह सकेगा हरगिज गुलामखाना,
आजाद होगा-होगा, आता है वह जमाना।
खूँ खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का,
कर देंगे जालिमों का, हम बन्द जुल्म ढाना॥''

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

हिन्दू नववर्ष का इतिहास एवं महत्व

- कु. भावना पहल

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हमारा नववर्ष है। हमें परस्पर इसी दिन एक दूसरे को शुभकामनाएँ देनी चाहिए।

भारतीय नववर्ष का ऐतिहासिक महत्व

1. यह दिन सृष्टि रचना का पहला दिन है। इस दिन से एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ उन्नीस वर्ष पूर्व इसी दिन सृष्टि की रचना हुई।

2. विक्रमी संवत का पहला दिन। उसी राजा के नाम पर सम्वत् प्रारम्भ होता था जिसके राज्य में न कोई चोर हो, न अपराधी हो और न ही कोई भिखारी हो। साथ ही राजा चक्रवर्ती सम्राट भी हो। सम्राट विक्रमादित्य ने 2075 वर्ष पहले इसी दिन राज्य स्थापित किया था।

3. भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक दिवस। श्रीराम ने भी इसी दिन को लंका विजय के बाद अयोध्या में राज्यभिषेक के लिए चुना।

4. नवरात्र स्थापना। शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात्, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। श्रीराम के जन्मदिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।

5. गुरु अंगददेव प्रगटोत्सव। सिख परम्परा के द्वितीय गुरु का जन्म दिवस।

6. आर्यसमाज स्थापना दिवस। समाज को श्रेष्ठ (आर्य) मार्ग पर ले जाने हेतु वेदों के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की।

7. सन्त झूलेलाल जन्म दिवस। सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक सन्त झूलेलाल इसी दिन प्रगट हुए।

8. शालिवाहन संवत्सर का प्रारम्भ दिवस। विक्रमादित्य की भांति शालिम्वाहन ने शकों को परास्त कर भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना।

9. युगाब्द संवत्सर का प्रथम दिन। कलि के प्रथम दिन युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ।

भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक महत्व

1. वसन्त ऋतु का आरम्भ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगन्ध से भरी होती है।

2. फसल पकने का प्रारम्भ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

3. नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए यह शुभ मुहूर्त होता है। अतः हमारा नव वर्ष कई कारणों को समेटे हुए है। अंग्रेजी नववर्ष न मना कर भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास के साथ मनायें और दूसरों को भी मनाने के लिए प्रेरित करें।

नवसंवत्सर, नवरात्रि और रामनवमी के इन मांगलिक अवसरों पर अपने-अपने घरों को भगवा ओइम् पताकाओं और आम के पत्तों की बन्दनवार से सजाना चाहिए।

नव संवत्सर-विक्रम संवत 2076 का 6 अप्रैल 2019 को शुभारम्भ हो रहा है। पुराणों के अनुसार इसी तिथि से ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण आरम्भ किया था। इसलिए इस पावन तिथि को नव संवत्सर पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। संवत्सर-चक्र के अनुसार सूर्य इस ऋतु में अपने राशि–चक्र की प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है। भारतवर्ष में वसन्त ऋतु के अवसर पर नूतन वर्ष का आरम्भ मानना इसलिए भी हर्षोल्लासपूर्ण है, क्योंकि इस ऋतु में चारों ओर हरियाली रहती है तथा नवीन पत्र-पुष्पों द्वारा प्रकृति का नव श्रृंगार किया जाता है। लोग नववर्ष का स्वागत करने के लिए अपने घर-द्वार सजाते हैं। नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्तों और ऋतुकाल के पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक हींग, जीरा, मिश्री, इमली और अजवायन मिलाकर खाने से रक्त विकार आदि शारीरिक रोग शान्त रहते हैं और पूरे वर्ष स्वास्थ्य ठीक रहता है।

राष्ट्रीय संवत:- भारतवर्ष में इस समय देशी-विदेशी मूल के अनेक सम्वतों का प्रचलन है। किन्तु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से

सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय सम्वत यदि कोई है तो वह विक्रम सम्वत ही है। आज से 2075 वर्ष यानी 50 ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से विक्रम सम्वत का भी आरम्भ हुआ था। प्राचीनकाल में नया संवत चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋण-मुक्त करना आवश्यक होता था। राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया सम्वत चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसन्त ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीनकाल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसन्त ऋतु में आने वाले वासन्तिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्यतिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथ से ही अपने नवसंवत्सर सम्वत को चलाने की परमपरा शुरु की थी और तभी से समूचा भारत राष्ट्र इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवन्दन करता है। दरअसल भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 94 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धन्वन्तरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे। प्रजावत्सल नीतियों के फलस्वरूप ही विक्रमादित्य ने अपने राज्यकोष से धन देकर दीन दु:खियों को साहूकारों के कर्ज से मुक्त किया था। एक चक्रवर्ती सम्राट होने के बाद भी विक्रमादित्य राजसी ऐश्वर्य भोग को त्यागकर भूमि पर शयन करते थे। वे अपने मुख के लिए राज्यकोष से धन नहीं लेते थे।

राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान-पिछले दो हजार वर्षो में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की पुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक सम्वतों को चलाया। किन्तु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान केवल विक्रमी सम्वत के साथ ही जुड़ी रही। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईसवी सम्वत का बोलबाला हो और भारतीय तिथि-मासों की काल गणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों, परन्तु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व-उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गुरु नानक, महर्षि दयानन्द, आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईस्वी सम्वत के अनुसार नहीं। नामकरण-मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या विवाह आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं।

हिन्दू नववर्ष का शुभागमन- 6 अप्रैल 2019 से हिन्दू नववर्ष एवं विक्रम संवत्सर 2076 का आरम्भ हो रहा है। हिन्दू नववर्ष के आरम्भ के साथ ही नवरात्र भी प्रारम्भ हो जाते हैं। वसन्त ऋतु के आगमन का संकेत मिलने लगता है, और वातावरण खुशनुमा एहसास कराता है। हिन्दू नववर्ष का आरम्भ चैत्र शुक्ल पतिपदा से होता है। ब्रह्मा पुराण के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था। इसी दिन से ही काल गणना का प्रारम्भ हुआ था। सतयुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है।

विक्रमी सम्वत् के अनुसार सृष्टि चक्र और काल गणना-हिन्दू काल गणना में समय की सटीक माप की गयी है।

समय का पैमाना-

निमिष-समय की पलक झपकते बराबर सूक्ष्म इकाई।

14 निमिष-1 कस्त

30 कस्त-1 काल

30 मुहूर्त-1 अहोरात्र (एक दिन)
43,20,000 वर्ष-12,000 ब्रह्मा वर्ष (महायुग)
चार युग-
कलियुग-1 गुणा 432000
द्वापर युग-2 गुणा 432000
त्रेता युग-3 गुणा 432000
सतयुग-4 गुणा 432000
कुल-10 गुणा 4320,000 (महायुग)
71 महायुग=1 मन्वन्तर
1000 महायुग=1 कल्प
(4,32,00,000 वर्ष)
1 कल्प=ब्रह्मा 1 दिन
ब्रह्मा अहोरात्र=8,64,00,00,000 वर्ष
ब्रह्मा पुराण में कहा गया है कि
चैत्र मासे जगदब्रह्मा समग्रे प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदय सति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का हिन्दू संस्कृति में विशेष महत्व है। इस दिन का भारत के स्वर्णित इतिहास में उल्लेखनीय महत्व है।

आधुनिक सभ्यता की अन्धी दौड़ में समाज का एक वर्ग इस पुण्य दिवस को विस्मृत कर चुका है। आवश्यकता है इस दिन के इतिहास के बारे में जानकारी लेकर प्रेरणा लेने का कार्य करें। भारतीय संस्कृति की पहचान विक्रमी संवत्सर में है, न कि अंग्रेजी नववर्ष से। हमारा स्वाभिमान विक्रमी संवत्सर को मनाने से ही जागृत हो सकता है, न कि रात भर झूमकर एक जनवरी की सुबह सो जाने से। इसका सशक्त उदाहरण पूर्व प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई का यह कथन है, जिसे उन्होंने 1 जनवरी को मिले शुभकामना सन्देश के जवाब में कहा था कि मेरे देश का सम्मान वीर विक्रमी नव संवत्सर से है। 1 जनवरी गुलामी की दास्तान है। **-साभार-दिव्ययुग**

अनमोल मोती

1. यदि हर कार्य यह समझ कर किया जाए कि भगवान मेरा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।
2. एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।
3. समस्या स्वरूप नहीं समाधान स्वरूप बनो और बनाओ।

(पृष्ठ 19 का शेष)

एक ज्वलन्त उदाहरण:- श्रीरामचन्द्र जी कोई साधारण पुरुष न थे वह मर्यादा पुरुषोत्तम थे और उनके कुल गुरु विशिष्ट भी ऋषि ब्रंह्मा के पुत्र थे, श्रीराम को गद्दी पर बैठाने का मुहूर्त विशिष्ट ऋषि ने निकाला था। इसी मुहूर्त में श्री राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा था। पीछे श्रीराम के पिता दशरथ को पुत्र वियोग में मृत्यु हो गई। तीनों रानियां विधवा हो गयी, आगे चलकर सीता का हरण हुआ, विशिष्ट की शुभ मुहूर्त शुभ कार्य हेतु व्यर्थ गया। इस ऐतिहासिक उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि शुभ व अशुभ मुहूर्त ज्योतिषि का चलन भी भ्रामिक है।

गणित ज्योतिष अन्त में:- वेदों की शिक्षा के आधार पर गणित ज्योतिष सत्य है, गणिति ज्योतिष द्वारा हम सौ वर्ष पहले बता सकते हैं कि क्या होगा। जैसे कि तिथियों का हिसाब, दिनों का हिसाब ऋतुओं का परिवर्तन, सूर्य व चन्द्र ग्रहण। 'चूंकि यह सारी चीजे' चांद सूर्य और जमीन इन तीनों को नियमानुसार गति पर निर्भर हैं, जिसमें एक पल का भी अन्तर नहीं आता। अत: हम सौ साल पहले बतला सकते हैं कि अमुक तिथि, अमुक वार को अमुक ऋतु में और अमुक समय में सूर्य व चन्द्र ग्रहण होगा, तथा कारण को देखकर कार्य का अनुमान अर्थात् कारण को देखकर होने वाले का अनुमान आदि।

आर्य समाज के चौथे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि:-
सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

पता-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड।
मो.9411512019/9557641180

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री आचार्य चाँद सिंह जी आर्य चरखी दादरी	5100/-
श्री भीमसैन जी खुल्लर वी.जी.एस. इण्ड्रस्टीज बहा.	2500/-
श्री अशोक जी जून आर्य नूना माजरा बहादुरगढ़	2100/-
श्री हरकमल जी ओ.एम.एक्स. सीटी बहादुरगढ़	2000/-
श्री रामदास जी जांगाड़ा धनौरा टीकरी उत्तर पद्रेश	1101/-
श्री तुषार गुलियां जी काण्ठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती मृदुला देवी ढाका दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री कृष्ण लाल जी आहूजा रोहतक हरियाणा	1100/-
श्री भीम सिंह जी डागर निलौठी झज्जर	1100/-
श्री राम सिंह जी पटवारी बराही रोड, बहादुरगढ़	1100/-
शिव मन्दिर जयदर नूना माजरा बहादुरगढ़	1100/-
श्री राजेन्द्र सिंह जी किला मोहल्ला बहादुरगढ़	1000/-
श्री महेन्द्र जी शर्मा माडल टाऊन बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती मायादेवी जी धर्मपत्नी श्री प्रकाश चन्द जी आर्य धनौरा टीकरी उ.प्र.	1000/-
श्री कृष्णा देवी शर्मा धर्मपत्नी सोमप्रकाश जी सैनिक नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्रीमती संतोष सुहाग धर्मपत्नी श्री महावीरसिंह सुहागा बहा.	500/-
डॉ. मनोज जी आर्य सुपुत्र लाल सत्येन्द्र जी आर्य धनौरा टीकरी, उत्तर प्रदेश	500/-
मा. जय भगवान जी शर्मा नूना माजरा बहादुरगढ़	500/-

गौशाला हेतु दान

श्रीमती सुमन जी गोयल धर्मपत्नी जयभगवान जी गोयल अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़	12100/-
श्रीमती कान्ता देवी धर्मपत्नी श्री विजेन्द्र कुमार जी सुभाष नगर, लाईनपार बहादुरगढ़	501/-
श्री जगवीर सिंह जी काजला नेहरू पार्क, बहा.	501/-

विविध वस्तुएं

श्री खाटू श्याम बाबा जी — 50 किलो चावल चीनी 25 किलो दाल 20 किलो

श्री यशपाल जी अरोड़ा कॉपी पैन पुस्तक आदि के लिए 6100/-

श्री विनोद कुमार जी दयानन्द नगर, बहा. — 44 स्वेटर

श्री दिपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली — 1 टीन सरसों तेल

डॉ. एस.के. टंडण रेलवे रोड, बहादुरगढ़ — सवा पांच दर्जन कॉपिया 130 पैन

श्री मा. बलजीत सिंह जी आर्य चिमिनी वाले — 2 किलो घी तथा 500/-

श्री राज सिंह जी डबास एच.एल. सिटी बहा. — 25 किलो चावल

श्री राजीव रिहानि दयानन्द नगर बहा. — 30 किलो दाल

श्री पी.एल.गंभीर जी दयानन्द नगर ब. — 25 किलो चावल 3 किलो मुंग की दाल, 5 किलो चीनी, रिफाइंड 3 किलो, 1 किलो चायपत्ती

एक समय विशिष्ट भोजन देने वाले

श्री राजेन्द्र सिंह जी खरब किला मोहल्ला पालिका कॉलोनी, बहा.

श्री अशोक कुमार जी जून नूना माजरा बहादुरगढ़

श्री कैलश चंद जी मित्तल दयानन्द नगर बहादुरगढ़

श्री विजय कुमार जी सैक्टर-9, बहादुरगढ़

श्री विश्वनाथ जी आर्य लोहा मर्चण्ट अग्रवाल कॉलोनी, बहा.

श्रीमती सुमित्रा देवी जी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मी नारायण जी ऑडीचवाल काठमण्डी बहादुरगढ़

श्री कैप्टन महेन्द्र सिंह पवार अमेरिका वाले

श्रीमती शिवाणी छिल्लर राम नगर, बहादुरगढ़

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स**, 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**–41548503, **चलभाष**–9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 मार्च 2019 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें ओ३म् आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

नि:शुल्क योग एवम् आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर

तथा

ऋग्वेद बृहद् यज्ञ

सोमवार 25 मार्च से रविवार 31 मार्च 2019 तक

सानिध्य:- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)
योग प्रशिक्षक एवम् यज्ञ ब्रह्मा:-श्री स्वामी विदेह योगी, (संस्थापक सर्वाध्यक्ष-स्वस्ति पथ, महर्षि दयानन्द सेवा सदन पिपली रोड, कुरुक्षेत्र हरियाणा)।
वेद पाठ:- श्री रवि शास्त्री व श्री ध्रुव शास्त्री (आश्रम)
मुख्य प्रवक्ता:-स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य चांद सिंह जी आर्य (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़) **स्वामी सच्चिदानन्द जी** (फर्रूखनगर आश्रम), **आचार्य खुशी राम जी** (दिल्ली)
भजनोपदेशक: पंडित रमेश चन्द्र जी वैदिक (झज्जर), **संगीताचार्य: लक्ष्मण प्रसाद जी, श्री रामानन्द जी और आश्रम के ब्रह्मचारी एवम् कन्या गुरुकुल लौवा कलां की छात्राओं द्वारा।**

दिनचर्या: सोमवार 25 मार्च 2019 को शिविर उद्घाटन सांय 4 बजे। मंगलवार 26 मार्च 2019 प्रात: 5 से 6.30 बजे तक आसन व्यायाम प्राणायाम अभ्यास, 7:00 बजे से 9 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, सायं 4.30 बजे से 6.30 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, रात्रि मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन।

नोट- -शिविर मध्य महिलाएं भी भाग ले सकती हैं। ❑ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजक:
राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट, 9313923155

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799

सत्यपाल वत्सार्य
उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359

कन्हैयालाल आर्य
उपप्रधाम ट्रस्ट, 9911197073

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507, मो. 9416054195

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

मार्च 2019

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

विभिन्न कार्यक्रमों की सुन्दर झलकियां

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 5 पर)